CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भगवान् विश्वनाथ का स्वरूप

विश्वनाथ

द० ६३०८
व० वि० पी०
पुस्तकालय
मू० २।-

आशुतोष आरक्षित

ब्रह्मनिष्ठ
तीशचन्द्र चक्रवर्ती

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आंशिक आरक्षित

भगवान् विश्वनाथ का स्वरूप

(अद्वैत विश्वविद्यालय नेपालकी स्वीकृत पाठ्य पुस्तक)

रचयिता :
श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ
(डा०) क्षितीशचन्द्र चक्रवर्ती
एम० ए०, डी०, फिल०, वि० एल०
संस्थापक : अद्वैत संस्था,
कुलपति : अखिल अद्वैत विश्वविद्यालय, नेपाल।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

☐ प्रकाशक :
अद्वैत संस्था, चुंदी शाखा (भानु भूमि)
गण्डकी अञ्चल, नेपाल ।

☐ कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा
२०२७

☐ प्रथम प्रकाशन
११०० प्रति

☐ सर्वाधिकार अद्वैत संस्था. नेपाल ।

☐ मूल्य : भारु० २।००

Rs 3 - 00

☐ मुद्रक :
श्री माहेश्वरी प्रेस
भाट की गली (गोलघर)
वाराणसी-१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब्रह्मनिष्ठ
(डा०) क्षितीशचन्द्र चक्रवर्ती

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आशीर्वचन

□

श्रुति—वेदके प्रतिपाद्य विषय ईश्वर (भगवान् विश्वनाथ) हैं। अतः यह सब कुछ ईश्वर ही है। जीव और जगत्का स्वरूप भी परमात्मा विश्वनाथसे अभिन्न है। अतः "विश्वनाथका स्वरूप" अद्वैत संस्थाका सर्वोपरि श्रेष्ठ ग्रन्थ है। इस ग्रन्थके अध्ययनके साथ "रुरुक्षेत्र और साक्षात्कार" लघु ग्रन्थको भी मुमुक्षु पुरुषको पढ़ लेना और उसका विचार करना योग्य है। इन दो ग्रन्थोंका मननपूर्वक अध्ययन करलेने पर मुमुक्षु पुरुषों का इष्ट "साक्षात्कार" सहजमें ही प्राप्त होगा। चुंदी शाखाके सदस्य लोगोंने इसके प्रकाशनके लिए जो सहयोग किया है, उससे महान् पुण्य और पुण्यजनित चरम साक्षात्कार अवश्य प्राप्त होगा।

०२७ कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा
शान्ति कुटीर रामघाट, वाराणसी

के० सी० चक्रवर्ती

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समर्पण

'भगवान् विश्वनाथका स्वरूप'

को

भगवान् विश्वनाथका प्रतीक "अद्वैत संस्था"

चुँदी शाखाके लिये

समर्पित

"त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पितम्"

समर्पयिता

चुँदी शाखा परिवार

अद्वैत संस्था गण्डकी

अञ्चल, नेपाल

मार्ग कृष्ण पञ्चमी

२०२७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भगवान् विश्वनाथ की प्रेरणा

□

अद्वैत संस्था वाराणसी शाखाके तत्वावधान में बालाजी मन्दिर वाराणसी में आयोजित सप्ताहव्यापी सत्संग समारोहमें श्री पूज्य गुरुचरण श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ डा० चितीशचन्द्र चक्रवर्ती जी की सेवा में अद्वैत संस्थाके वरिष्ठ उच्चपदाधिकारी उपस्थित थे। इस अवसर पर अद्वैत संस्था द्वारा हिन्दीमें किसी ग्रन्थका प्रकाश हो तो भगवान् विश्वनाथके परम भक्त काशीवासी अपने हृदय स्थित विश्वनाथ भगवान्का प्रत्यक्ष दर्शन (अनुभव) कर सकते, ऐसी चर्चा चल रही थी। इधर अद्वैत-संस्था चुँदी शाखा नेपाल के सज्जन लोग भी श्री पूज्यपाद गुरुदेवके किसी ग्रन्थ रत्न को आर्थिक दान देकर प्रकाशित कराना चाहते थे। श्री पूज्यपाद की आज्ञा भी मिली। अतएव यह ग्रन्थ रत्न हिन्दीमें प्रकाशित हो सका।

प्रस्तुत ग्रन्थ सात वर्णकमें विभक्त है। प्रत्येक वर्णक ने आत्मा, ब्रह्म, ईश्वर (भगवान् विश्वनाथ में कुछ भी भेद नहीं है) ऐसा स्पष्ट बताया है। खास करके ईश्वर स्वरूपके सम्यक् मननके लिये प्रस्तुत ग्रन्थ रचित हुआ है।

दुर्बोध ईश्वर तत्व एवं दुष्प्राप्य आत्मज्ञानको सुबोध तथा सुप्राप्य बनाना इस ग्रन्थका महान् लक्ष्य है। ईश्वर सिद्धिमें वेदान्त प्रमाण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

को अनिवार्य बताया गया है। यहाँ ईश्वरके लक्षणको स्पष्ट रूपसे प्रतिपादन कर भगवान् विश्वनाथके स्वरूपका परिचय दिया गया है। उपाधियुक्त ईश्वरका तटस्थ लक्षण है, और उपाधि विनिर्मुक्त स्वरूप लक्षण है इस बातको स्पष्ट प्रतिपादन किया है। कार्य कारण रहस्यका उद्घाटन करता हुआ यह ग्रन्थ ब्रह्मस्वरूप भगवान् विश्वनाथका सकली रूप कार्यकारण विनिर्मुक्त है—यह बात दृढ़ताके साथ बता रहा है। प्रत्यक्ष दृष्ट न होने पर भी ईश्वर अवश्य है, इस बातको यहाँ प्रमाणित किया गया है। भगवान् विश्वनाथका जगन्निर्माण सापेक्ष नहीं है, निरपेक्ष है। इसमें ईश्वरकी अनेकताका अवहेलना किया गया है। निरपेक्ष ईश्वरने क्यों जगत्का निर्माण किया? इसका आशय भी सुस्पष्ट किया गया है। भगवान् विश्वनाथकी आराधना उनके स्वरूपको जाने बिना सम्भव नहीं हो सकती, अतः ईश्वरका स्वरूप सत्य ज्ञान और अनन्त रूपसे प्रदर्शित किया गया है। ईश्वर स्वरूपके निर्देशनमें इतने मात्रसे सन्तोष न लेकर ईश्वरकी सर्वव्यापकता सर्वशक्तिमत्ता आदिको सुस्पष्ट रूपसे उल्लिखित किया गया है। अन्तमें ईश्वरकी आराधनाका रूप, और ईश्वरकी आराधनामें सत्संग ही मुख्य आराधना है, यह बद्ध परिकर हो कर बताया गया है। "कर्मबन्धनसे मुक्त हो जाना ही आराधनाका फल है, ज्ञानवान् पुरुष कर्मबन्धन से मुक्त हो जाते हैं। ईश्वरके दर्शन मिलने पर (आत्मस्वरूपका साक्षात्कार हो जाने पर) सम्पूर्ण संशय निवृत्त हो जाता है और सदाके लिये मनुष्य कृतकृत्य होता है", यह बात सुस्पष्ट बताई गई है।

अधिक कहना आवश्यक नहीं है। अत्यन्त मननपूर्वक ग्रन्थका एक बार मात्र भी अवलोकन कर लेनेसे **"भगवान् विश्वनाथका स्वरूप क्या है"** और उनकी प्राप्ति किस प्रकार होगी? इस शंका का समाधान इस ग्रन्थ रत्नने सुस्पष्ट रूपसे किया है। काशी वासी सज्जन तथा अन्य आस्तिक विचारक हिन्दू संस्कृति सम्पन्न सज्जन भक्तगण प्रस्तुत पुस्तिकासे अवश्य लाभान्वित होंगे, यह हमारी सत्यधारणा है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इस ग्रन्थ रत्नको प्रकाशनमें लानेवाले पूज्य गुरुचरणके आशीर्वाद प्राप्त अद्वैत संस्था चुँदी शाखाके सज्जन अद्वैत प्रेमी लोग सत्संगमें उत्तरोत्तर रुचि रखकर अपने वास्तव स्वरूप विश्वनाथको प्राप्त करनेमें सफल बनेंगे ।

अंतमें स्वर्गीय नेपाली आदि कवि भानुभक्त आचार्यके प्रति भी मैं आदर ज्ञापन करता हूँ, क्योंकि जिनके आशीर्वादसे ब्रह्मज्ञान मार्ग को अपनाकर उनके पौत्र श्रीशिवभक्त आचार्य जो हमारी अद्वैत संस्था चुँदी शाखाके शाखा प्रमुखत्व स्वीकार कर अद्वैत ज्ञानको परिवर्द्धित कर रहे हैं । इसी प्रकार सचिव मुक्तिनाथ आचार्य (भानुभक्तके प्रपौत्र) भी अद्वैत ज्ञान प्रति अत्यन्त श्रद्धा भाजन बने हुए हैं ।

पुनश्च—ग्रन्थ रत्नके प्रकाशनमें सहयोग प्रदान करनेवाले स्थानीय शाखाके अद्वैत परिवार और पण्डित परिवार एवं अन्य सज्जनों के प्रति भी—"भगवान् विश्वनाथका स्वरूप" सुस्पष्ट हो जाय यह शुभेच्छा व्यक्त करता हूँ ।

हिन्दी संस्करणमें पुस्तक प्रकाशन करनेके लिये विशेष प्रोत्साहित करनेवाले अद्वैत संस्था नेपालके श्रद्धेय सभापति श्रीगोविन्दराम "सरस्वती", अखिल अद्वैत विश्वविद्यालय नेपालके सभापति श्री बसन्तलाल "सरस्वती" कुलपति सहचारी श्रीअनन्तलाल "सरस्वती" के प्रति भी सादर श्रद्धा ज्ञापन करता हूँ । साथ ही नेपालीसे हिन्दी भाषामें सुस्पष्ट अनुवाद कर ग्रन्थ प्रकाशनमें पूर्णसहयोग करनेवाले श्रद्धेय मित्रवर अद्वैत मार्तण्ड श्री ज्ञानेश्वर "सरस्वती"—उपकुलपति "तारक" अद्वैत विश्वविद्यालय रिडी थोर्गा नेपालके प्रति विशेष सम्मान व्यक्त करता हूँ ।

अन्तमें जिनके ब्रह्मज्ञानोपदेशसे हमारा अज्ञान छिन्न-भिन्न होकर नष्ट हो गया । हम कृतकृत्य बन गये । ऐसे परम दयालु कारुणिक पूज्यपाद गुरुचरण श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ डा० चितीशचन्द्र जी के पादारविन्दमें पुनः सश्रद्ध दण्डवत् समर्पण करता हूँ ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

साथ ही शास्त्रके तात्पर्यको न समझकर उलझनमें पड़े हुए हिन्दी भाषा-भाषी सज्जन मुमुक्षु लोग अत्यन्त आदरपूर्वक इस ग्रन्थको पढ़ें और परमपूज्य गुरुदेवके करकमलोंके द्वारा समुद्घाटित अद्वैत संस्था प्रधान शाखा वाराणसीसे सम्पर्क रखकर दैनिक साप्ताहिक सत्संगमें भाग लें। फलस्वरूप भगवान् विश्वनाथको अपने निजीरूपमें साक्षात् अनुभवकर परम शान्ति रूप मोक्ष प्राप्त करें।

जिनके सुशासन कालमें हमारी अद्वैत संस्था नेपालमें सुपरिचालित हो रही है, ऐसे ईश्वर मूर्ति राष्ट्रनायक श्री ५ महाराजाधिराज महेन्द्रवीर विक्रम शाहदेव सरकारकी दिर्घायु—कामना करता हुआ विश्राम लेता हूँ।

ज्ञानहरि "सरस्वती"
सर्वप्रधान उपकुलपति
"सन्तापहारक" अद्वैत विश्वविद्यालय
उपसभापति अद्वैत संस्था
प्रधान कार्यालय नारायणगढ, नेपाल।

मार्ग १ गते
२०२७ विक्रम सम्वत्
वाराणसी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषय-सूची

	पृष्ठ
☐ प्रथम वर्णक :	
भगवान् विश्वनाथका स्वरूप क्या है ?	१
☐ द्वितीय वर्णक :	
प्रत्यक्ष दृष्ट न होने पर भी भगवान् विश्वनाथ अवश्य हैं, यह निश्चय करना चाहिए।	१६
☐ तृतीय वर्णक :	
भगवान् विश्वनाथ एक अद्वितीय और विश्वके निरपेक्ष निर्माता हैं।	२६
☐ चतुर्थ वर्णक :	
जगत् निर्माणका रहस्य	३२
☐ पञ्चम वर्णक :	
भगवान् विश्वनाथ कौन हैं ?	४१
☐ षष्ठ वर्णक :	
भगवान् विश्वनाथके अन्य-अन्य लक्षण	४८
☐ सप्तम वर्णक :	
भगवान् विश्वनाथ की आराधना और फल	६४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प० ६३०८
वा०वि०पी०,
प० सं० २।—

भगवान् विश्वनाथका स्वरूप

प्रथम वर्णक

भगवान् विश्वनाथका स्वरूप क्या है ?

(ईश्वरका तटस्थ लक्षण)

भगवान् विश्वनाथके स्वरूपको दिखाना संभव नहीं है। वे इन्द्रियोंके अतीत हैं, अतः केवल अनुमान उनका साधक नहीं हो सकता। किन्तु वेदान्तके सहारेसे भगवान् विश्वनाथकी सिद्धि संभव होती है; जो इन्द्रियोंद्वारा ज्ञात नहीं हो सकती उस वस्तुको केवल वेदान्त (वेदका अन्तिम भाग) ज्ञापन करता है। एकमात्र अद्वितीय परमार्थ भगवान् विश्वनाथके स्वरूपको जाने विना मनुष्यका सम्पूर्ण दुःख निवृत्त नहीं हो सकता; अतः विश्वनाथ भगवान्का ज्ञान परमावश्यक है और उसका एकमात्र साधन विश्वनाथरूप अद्वितीय भगवान्की आराधना है। वेदान्त प्रमाण जन्य उत्पन्न ज्ञान किसी लौकिक प्रमाणके द्वारा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कभी भी बाधित नहीं हो सकता। भगवान् विश्वनाथका इस प्रकार परम प्रयोजनीय और सर्वथा अबाधित जो ज्ञान है उसकी उत्पत्तिके हेतुभूत होनेके कारण वेद प्रामाणिक है। कार्यपरक होनेके कारण वेदका प्रामाण्य नहीं किन्तु अज्ञात ज्ञापक होनेसे वेद प्रमाण है। श्वेताश्वतर तैत्तिरीय आदि हजारों श्रुतियोंने सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान परमानन्दरूप परमेश्वर विश्वनाथका प्रतिपादन किया है।

सगुण-निर्गुण (साकार-निराकार) भेदोंसे भक्ति सिद्धिके लिए यह एक अद्वितीय परमार्थ वस्तु भगवान् विश्वनाथको पहले द्विविधरूपसे शास्त्रोंमें निरूपित किया गया है। इसके बाद निर्गुण किम्वा निराकार एक ही रूप है, इस प्रकार दिखाकर सगुण किम्वा साकार चतुर्विध है इस प्रकार विशेष रूपसे शास्त्रोंमें निरूपण किया गया है। यह सगुण किम्वा साकार चतुर्विधरूप है—(१) गुणत्रय अवच्छिन्न, माया उपाधियुक्त ईश्वर (२) रजोगुण अवच्छिन्न, ब्रह्मा (३) सत्वगुण अवच्छिन्न, विष्णु और (४) तमोगुण अवच्छिन्न, रुद्र (महेश्वर)। वास्तवमें भगवान् विश्वनाथ उपाधिरहित चैतन्यस्वरूप हैं; इनको निराकार किम्वा निर्गुण ब्रह्म कहा गया है। चार प्रकारकी उपाधियोंसे युक्त भगवान्का यह स्वरूप भक्तों-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की भक्तिकी सिद्धिके लिए शास्त्रोंमें बताया गया है। ईश्वर, परमेश्वर, आत्मा, परमात्मा, ब्रह्म ये सब विश्वनाथ भगवान्‌के पर्याय शब्द हैं।

अब गुणत्रय अवच्छिन्न, माया उपाधियुक्त परमेश्वर विश्वनाथका विस्तृत रूपसे निरूपण किया जाता है। ईश्वरकी यह उपाधियुक्तता तटस्थ लक्षण है और सम्पूर्ण उपाधियोंसे मुक्तता स्वरूप लक्षण है। ईश्वरकी साकारता जिस प्रकार भगवद्भक्तका आलम्बन है उसी प्रकार निराकारता मुक्तिके लिए आलम्बन है।

इस दृश्यमान सम्पूर्ण जगत्‌की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलयके जो कारण हैं उनको ही विश्वनाथ कहा गया है; यह ईश्वरका तटस्थ लक्षण है (जगत् रचनाकार्य सम्बन्धी लक्षण)।

कारणके विना जगत् उत्पन्न नहीं हो सकता; क्योंकि कोई भी पदार्थ कारण विना उत्पन्न नहीं देखा जाता। जो-जो पदार्थ जहाँ-जहाँ उत्पन्न होता है वह-वह पदार्थ अपने कारणसे उत्पन्न दृष्टिगोचर होता है। जिस प्रकार मृत्तिकासे घट, सूत्रसे वस्त्र, सुवर्णसे भूषण और तिलोंसे तेल उत्पन्न होता है।

जो-जो कर्ता जिस-जिस कार्यको बनानेकी इच्छा रखता है वह पहले उस-उस कारणको ग्रहण करता है;

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिस प्रकार कुम्भकार किम्वा स्वर्णकार घट किम्वा भूषणके निर्माणकी इच्छा कर मृत्तिका किम्वा सुवर्ण आदि पदार्थोंका ही ग्रहण करता है। यदि कारणके विना कोई पदार्थ उत्पन्न होता तब कोई भी व्यक्ति उसके कारणका ग्रहण नहीं करता। किन्तु सभी कार्यकर्ता कारणभूत पदार्थोंको न लेकर किसी भी कार्यको पैदा नहीं कर सकते। **जगत् भी कार्यरूप है। अतः उसके कारणको मानना ही पड़ेगा;** अर्थात् जगत्का भी कोई कारण अवश्य है, यह निश्चय करना होगा।

कोई भी पदार्थ अपने स्वरूपसे अपने आप उत्पन्न नहीं हो सकता। यदि कहा जाय कि जिस प्रकार वीज स्वयं ही वृक्षरूपसे प्रकट होता है उसी प्रकार सम्पूर्ण जगत् स्वभावसे ही उत्पन्न हो गया है—उसमें किसी कर्ताका प्रयोजन नहीं होता अर्थात् अपने स्वरूपसे अपने आप ही उत्पन्न होता है, यह ठीक नहीं है, क्योंकि सम्पूर्ण पदार्थोंकी उत्पत्तिमें सर्वत्र नियम होता है कि अमुक पदार्थसे ही अमुक वस्तुकी उत्पत्ति होती है; उससे भिन्न पदार्थोंसे उत्पत्ति नहीं हो सकती। इस प्रकार सर्वत्र कार्यकारण भाव नियम विद्यमान है। यदि स्वभाववशात् अपने आप ही सम्पूर्ण पदार्थोंकी उत्पत्ति होती तब यह कार्यकारण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नियम नहीं रहता । अतः स्वभाव जगत्का कारण नहीं हो सकता ।

कर्ताको प्रयत्नकी अपेक्षा होती है, इसलिए भी स्वभाव जगतका कारण नहीं हो सकता । जिस प्रकार घटकी उत्पत्तिमें कुम्भकारके प्रयत्नकी आवश्यकता होती है, उसी प्रकार जगत्की उत्पत्ति भी ईश्वरके संकल्परूप प्रयत्नसे ही संभव होती है, इस प्रकार जानना चाहिए ।

इसके अतिरिक्त जगतके निर्माणमें पदार्थोंके यथायोग्य स्थापनासे भी ज्ञात होता है कि कोई एक महान् बुद्धिमान् सर्वज्ञ पुरुषसे ही जगत्की उत्पत्ति हो गई है । आकाशमें तारागण सूर्य-चन्द्र आदि ग्रहोंका यथायोग्य रीति अनुसार स्थापन किया गया है; पृथ्वीमें भी नदी, समुद्र, पर्वत आदि की यथायोग्य स्थिति है; वनस्पतियों के वीजसे उत्पत्ति और फलवान आदि क्रम भी उपयोगी रीतिसे चल रहा है; और मनुष्य आदि सम्पूर्ण प्राणियोंकी अन्नादिका भोजन पाचन और निष्कासन आदि व्यवस्था प्रयोजन अनुसार चल रही है—यह सभीका अनुभव गोचर है—इस प्रकार युक्तियुक्त और सर्वतोभावसे उपयोगी व्यवस्थायुक्त यह जगत् चक्र अपने आप (स्वभावसे) सञ्चालित नहीं हो सकता; किन्तु सर्वज्ञ ईश्वरसे ही यह इस प्रकार नियोजित हो रहा है यह स्वीकार करना होगा ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि कहें कि कालमें (यथासमयमें) सूर्य उत्ताप प्रदान करता है, समय पर ठण्डी होती है, वर्षा होती है, सृष्टि होती है, वृक्ष फूल और फलयुक्त होता है, समय पर ही गर्भ उत्पन्न होता है—इस प्रकार सम्पूर्ण जगत् यथाकालमें उत्पन्न होता है, अतः काल ही जगत्का कारण है, तब हम कहेंगे कि यह ठीक नहीं है। **काल जगत्का कारण नहीं हो सकता,** क्योंकि स्वयं कालकी भी उत्पत्ति होती है। अथर्वशिर उपनिषद्में कहा गया है— अक्षर परमात्मासे काल उत्पन्न हुआ है और कालकी उत्पत्ति के फलसे परमात्माको व्यापक कहा गया है। श्वेताश्वतर उपनिषद्में कहा गया है—वह परमात्मा भी काल है, अर्थात् कालकी उत्पत्ति और नाशका कारण है। मनुस्मृति में उल्लिखित है—परमेश्वर ने कालकी रचना की है और वर्ष, मास, पक्ष आदि कालके परिमाणकी भी रचना की है। इस प्रकार श्रुति और स्मृतिमें कालकी उत्पत्ति वर्णित है। अतः **सृष्टिके पश्चात् उत्पन्न होनेके कारण काल जगत्का कारण नहीं हो सकता।**

काल जगत्का कारण नहीं है

जड़रूप होनेके कारण भी काल जगत्का कर्ता नहीं हो सकता, क्योंकि जगत्की रचना तो विचारपूर्वक ही होती है। ज्ञानरहित होनेके कारण कालकी शक्ति नहीं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हो सकती । अतः काल जगत्की रचना नहीं कर सकता। शीत, उष्णता, वृष्टि, फल, पुष्प, आदि ईश्वरकृत नियमों के अनुसार होता रहता है; कालके नियम अनुसार नहीं। जड़पदार्थ (काल) अपने लिए किम्वा औरोंके लिए कोई भी नियम नहीं वना सकता । वर्ष, मास, पक्ष, दिन आदि कालके अवयवोंसे प्रत्यक्ष रूपसे कालका जड़स्वभाव प्रतीत होता है; अतः काल जगत्का कारण नहीं हो सकता ।

"जो जीव जैसा कार्य करता है वह वैसा ही वनता है । जो श्रेष्ठ कर्म करता है, वह श्रेष्ठ जन्म प्राप्त करता है। और जो पाप-कर्म करता है वह नीच योनिको प्राप्त करता है"—इस बृहदारण्यक उपनिषद् के अनुसार कर्म ही जगत्का कारण है, इस प्रकार कहना भी उचित नहीं है। क्योंकि कर्म परतन्त्र है; सर्वत्र क्रिया कर्मके अधीन होता है । अनुष्ठानके समय कर्म किसी भिन्न चेतन पुरुष द्वारा किया जाता है और फल प्राप्त समयमें कोई और साक्षी पुरुष ही उसके फलको प्रदान करता है। दोनों ही प्रकार-से कर्म परतन्त्र होनेके कारण वह जगत्का कारण नहीं हो सकता । वेदान्त मत अनुसार जगत् और कर्मके भीतर परस्पर कार्यकारण रूप अनादि सम्बन्ध मानलेने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पर भी कर्म केवल निमित्त हो सकता है, यह स्वतन्त्र रूपसे कर्ता नहीं हो सकता। उपर प्रदर्शित बृहदारण्यक श्रुतिका तात्पर्य यह है कि कर्म जन्यका (अर्थात् जगत्का) निमित्त मात्र है, जगत्का स्वतन्त्र कर्ता नहीं।

कर्म जगत् सृष्टिके पश्चात् ही होता है अतः वह जगत्का कारण नहीं हो सकता। सम्पूर्ण कर्म जगत्की उत्पत्तिके वादमें किया जाता है; क्योंकि कर्ता और करण के विना कहीं भी कर्मका अनुष्ठान नहीं हो सकता—कर्म करनेके लिए सम्पूर्ण सामग्री (कर्म प्रारम्भ करनेके पूर्व) विद्यमान होना आवश्यक है किन्तु आकाशादि पञ्च-महाभूतकी उत्पत्तिके पूर्व—शरीर, इन्द्रिय, अन्तःकरण आदि कर्म सामग्री नहीं रह सकती। सृष्टि प्रवाहको अनादि मान लेने पर भी सर्वत्र आकाश आदि तत्वका ही सर्वप्रथम होना सिद्ध होगा। (शरीर आदिका प्रथम होना सिद्ध नहीं होता) अतः शरीर आदिसे किया गया कर्म आकाश आदि जगत्का कारण किस प्रकार हो सकेगा ?

वैशेषिक मत अनुसार वायु, अग्नि आदि चार महा-भूतको नित्य परमाणु—जो सृष्टिके आदि कालमें जीवके कर्मरूप निमित्तवशात् ईश्वरकी इच्छासे परस्पर द्व्यणुक त्र्यणुक आदि कर्मसे स्थूल भाव प्राप्त कर इस सम्पूर्ण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जगत्की उत्पत्तिका कारण होता है—वह अनादि नहीं है, क्योंकि वेदशास्त्रोंमें सर्वत्र पञ्चमहाभूतों की उत्पत्ति कथित की गई है। तैत्तिरीय उपनिषद्में कहा गया है—उस परमात्मा से आकाश उत्पन्न हो गया है, इस आकाशसे वायु उत्पन्न होता है, अग्निसे जल और जलसे पृथ्वी पैदा हो गई है। पञ्चमहाभूतका परमाणु भी जगत् रचनाके अन्तर्भूत हो जानेके कारण जगत्का कारण नहीं हो सकता। जो अनादि नहीं है वह जगत्का कारण किस प्रकार होगा ?

तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः सम्भूतः

यदि हम परमाणुसे जगत्की उत्पत्ति मानलें तब परमाणुके संयोगद्वारा ईश्वरके लिए जगत् रचनामें ज्यादा विलम्ब हो जाता। एक हिमालय पर्वतकी रचनामें ही लाखों वर्ष व्यतीत हो जाते। ऐसा होने पर ईश्वरकी अलसता और असमर्थता भी प्राप्त होगी। ऐतरेय उपनिषद्में कहा गया है—उन ईश्वरने विचार किया कि जगत्की रचना करूँ और सम्पूर्ण लोकोंकी रचना की। इस वेद वचनके द्वारा परमेश्वरके संकल्प होनेके साथ ही तत्कालमें सृष्टिकी उत्पत्ति होगई है ऐसा कहा गया है। ईश्वरने परमाणुओंके संयोगद्वारा जगत्की रचना नहीं की है। जिस कार्यको जीव सौ वर्षमें भी नहीं कर सकता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उसको ईश्वर एक ही क्षणमें करनेमें समर्थ हैं। अतः **परमाणुवाद ठीक नहीं है।**

परमाणुओंके संयोगद्वारा ईश्वर सृष्टि रचना करते हैं; इस प्रकार श्रुतिस्मृतिरूप कोई भी प्रमाण नहीं है। वैशेषिक मतके अतिरिक्त अन्यत्र कहीं भी परमाणुवादका निरूपण नहीं है। इसलिए अपनी बुद्धिके द्वारा कल्पित कणाद मुनिका यह मत ठीक नहीं।

सत्व रज और तम त्रिगुणमय होनेके कारण प्रकृति केवल जड़ पदार्थ है, अतः स्वयं जड़ वस्तु होकर जगत्की रचना किस प्रकार कर सकेगी? जड़-वस्तुमें ज्ञान नहीं रहता और ज्ञानविना किसी भी पदार्थकी रचना सम्भव नहीं है। विचार रहित होनेके कारण प्रकृति जगत्का कारण नहीं हो सकती।

जहाँ जड़पदार्थमें किसी प्रकारकी कारणता देखी जाती है वहाँ चेतनका आश्रय होना अवश्य आवश्यक होगा। चेतनतायुक्त बालकका शरीर माताका दूध पान-कर वृद्धि प्राप्त होता है; मृत शरीर दूध पान करलेने पर भी बढ़ नहीं सकता। सर्वत्र सम्पूर्ण पदार्थोंकी उत्पत्तिमें परमात्माका चैतन्य ही कारण है, जड़ प्रकृति जगत्का कारण नहीं हो सकती।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऐतरेय उपनिषद्में कहागया है—"उस परमात्माने विचार किया कि मैं सृष्टि रचना करूँ।" तैत्तिरीय उपनिषद्में बताया है—परमात्माने इच्छा की कि मैं अधिक रूप धारण कर उत्पन्न हो जाऊँ। इस प्रकार वेद वचनरूप प्रमाणसे जगत्का निर्माण विचार पूर्वक हो जानेके कारण जड़ प्रकृति की जगत्कारणता संभव नहीं होती। प्रकृति ज्ञानशून्य है। उसमें विचारका होना संभव नहीं है। अतएव उसमें जगत्कारणता संभव नहीं है।

जिस प्रकार चुम्बक मणिके सहारेसे लोहाके टुकड़ेमें क्रिया होती है उसी प्रकार ब्रह्मचैतन्यके आश्रयमें प्रकृति भी जगत्कारण बनजाती है ऐसा मानलेना ठीक नहीं है। क्योंकि ऐसा मानलेने पर प्रकृति केवल करणमात्र होगी वह कर्ता नहीं बन पाएगी। राजाके आश्रयमें मन्त्रीके काम कर लेने पर भी वह मुख्यकर्ता के रूपमें परिगणित नहीं होता उसी प्रकार यहाँ **प्रकृतिको करणता हो सकती है किन्तु जगत्के मुख्य कारण रूपमें प्रकृतिको नहीं माना जा सकता।**

प्रकृति परमात्मासे भिन्न नहीं है अतः वह पृथक् रूपसे जगत्कारण नहीं हो सकती—प्रकृति और माया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परमेश्वरकी स्वाभाविक शक्ति; परमेश्वर विश्वनाथ कौन हैं ?

परमात्माकी स्वाभाविक शक्ति है। कार्यवशात् शक्तिका भिन्न-भिन्न नाम है। जगत्के कारण होनेसे उसको प्रकृति कहागया है; और ईश्वर पराङ्मुख जीवके लिए दुर्विज्ञेय है अतः उसको माया कहते हैं। शक्ति शक्तिवान्से भिन्न नहीं है। **शक्ति शक्तिवान्का स्वरूप ही है।** जिस प्रकार अग्निकी दाहकता शक्ति अग्निसे भिन्न नहीं है उसी प्रकार परमात्माकी शक्ति परमात्माका ही स्वरूप है। अतः **प्रकृति नामक अपनी माया शक्तियुक्त परमेश्वर ही इस जगत्की उत्पत्तिका कारण हैं, इस प्रकार निश्चय करना चाहिए।** श्वेताश्वतर उपनिषद्में कहा गया है—"प्रकृतिको माया जानलेना और जो माया-युक्त है उसको परमेश्वर जानलेना। उस मायायुक्त परमेश्वरने ही इस विश्वकी रचना की है।"

त्रिगुणारूप जड़ प्रकृति ब्रह्मसे अभिन्न है अतः ब्रह्म जड़ चेतन उभयरूप नहीं हो सकता। परमेश्वरका स्वरूप दोनों प्रकारका नहीं हो सकता। किन्तु एक ही प्रकारका है। क्योंकि परमात्मा विश्वनाथकी स्वाभाविक शक्ति वास्तवमें (यथार्थ रूपमें) जड़रूप नहीं है—विश्व-नाथ परमात्माका स्वरूप सच्चिदानन्द है अतः उनकी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपनी शक्ति भी तद्रूप है। सांख्यमतके अनुसार प्रकृति पुरुषसे भिन्न और विलक्षण स्वभाव होने पर भी वेदान्त मतमें प्रकृति रूप परमात्माकी स्वाभाविक शक्ति चैतन्य-रूप ही है, चैतन्यसे भिन्न किम्वा विलक्षण नहीं है। "परमेश्वरकी यह स्वाभाविक शक्ति भिन्न-भिन्न ज्ञान वल और क्रियारूप है" श्वेताश्वतर उपनिषद्का यह वाक्य परमात्मा विश्वनाथकी शक्ति ज्ञान स्वरूप ही है यह वता रहा है। उस शक्तिकी जो त्रिगुणामयता है वह केवल प्रतीति मात्र है, स्वाभाविक नहीं। केवल एक रूपसे जगतकी व्यवस्था ठीक नहीं हो सकती; अतः स्वकल्पित तीन गुणोंके द्वारा ईश्वरने (विश्वनाथने) त्रिगुणमय सृष्टिका निर्माण किया है। इस जगत्की रचना रूप कार्यवशात् ईश्वरकी शक्ति त्रिगुणमय है ऐसा प्रतीत होता है। स्वभावतः अनादिकालसे शक्ति त्रिगुण मय नहीं है, "अजन्मा प्रकृति सत्व रज और तम त्रिगुण रूप है," "मेरी दैवी माया शक्ति त्रिगुणमय और ज्यादा दुस्तर है," इस प्रकार श्रुति और स्मृति वचन सृष्टि-काल विषयक है, अनादि कालिन स्वाभाविक विषय नहीं इस प्रकार समझ लेना चाहिए। अतः परमात्माका दो प्रकारका रूप नहीं हो सकता। जिस प्रकार कार्यवशात्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नानारूप धारण करलेने पर भी नर्तक तद्रूप नहीं हो सकता। किम्वा सीपीमें चाँदी प्रतीत होने पर भी सीपी चाँदीरूप नहीं हो सकती। इसी प्रकार विश्वनाथका सम्पूर्ण जगत्‌रूप मायाका विस्तारमात्र है। परन्तु **भगवान् विश्वनाथ सर्वभूत गुणायुक्त नहीं हैं**—अर्थात् परमात्मा विश्वनाथको **निर्गुण और निरञ्जनके रूपमें जानना चाहिए।**

श्वेताश्वतर उपनिषद्‌में उपदिष्ट हुआ है कि "परमेश्वर सबके साक्षी हैं और वे हैं चेतन शक्ति प्रदाता और निर्गुण।" भगवद्‌गीतामें कहा गया है कि "वह ब्रह्म निर्गुण और सत्व गुणका भोक्ता भी है।" इस प्रकार श्रुति और स्मृतिओंके वचन द्वारा **विश्वनाथ परमात्माका स्वरूप निर्गुण निरूपित हो गया है।** ईश्वरकी शक्ति यदि स्वभावतः त्रिगुणामय होती तब भगवान् विश्वनाथ (ईश्वर) निर्गुण नहीं हो सकते; अतः भगवान् विश्वनाथका स्वरूप जड़-चेतनरूप दो प्रकारका नहीं है, यह निश्चय करना होगा।

विश्वनाथका स्वरूप निर्गुण

कार्य जैसा होता है उसका कारण भी वैसा ही होता है। जगत् त्रिगुण रूपमें प्रसिद्ध है; अतः उसका कारण ईश्वर अवश्य ही सगुण होगा—इस प्रकार मानना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कार्यका गुण कारणमें अनुगत नहीं होता

उचित नहीं है। क्योंकि कार्यके गुणको देखकर कारणके गुणका अनुमान करना संगत नहीं। कारणका गुण तो कार्यमें अनुगत होता है, किन्तु कार्यका गुण कारणमें अनुगत होने का नियम नहीं है। अतः जगत्के त्रिगुणमय होने पर भी परमात्माका स्वरूप सगुण नहीं हो सकता यह समझना चाहिए। जिस प्रकार कार्यरूप घटमें विद्यमान लाल और नीले रंगके फलसे कारणरूप कुम्भकार किम्वा मृत्तिका तत्तत् रङ्गयुक्त नहीं होता उसी प्रकार जगत् चेतनरूप और जड़रूप होने पर भी मूल कारण ईश्वरको सगुण नहीं माना जा सकेगा अतएव ईश्वरको निर्गुण ही समझना चाहिए।

"जहाँसे सम्पूर्ण भूत प्राणी उत्पन्न होते हैं और जिसमें जीवित रहते हैं और पुनः अन्तकालमें जिसमें लीन हो जाते हैं वह ब्रह्म है।" इस तैत्तिरीय श्रुतिके वचन

महाप्रलयके अनन्तर भी ईश्वर सगुण नहीं रहता

अनुसार ब्रह्ममें सम्पूर्ण जगत्के विलय हो जाने पर—त्रिगुणमय जगत्के ब्रह्ममें प्रवेश हो जाने से—जगत्के साथ सम्बन्धवशात्—परमेश्वरकी भी सगुणता अवश्य प्राप्त होगी—इस प्रकारकी आशंका ठीक नहीं। क्योंकि यद्यपि बीच-बीचकी प्रलयमें बीजरूपसे सम्पूर्ण पदार्थों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की अवस्थिति संभव है तथापि महाप्रलयके अन्तमें सम्पूर्ण जगत्का ब्रह्ममें विलय होने पर भी—ब्रह्ममें प्रवेश करने योग्य कोई भी वस्तु अवशिष्ट नहीं रहती। अर्थात् सम्पूर्ण जगत् ईश्वरके संकल्पमें विलुप्त हो जाता है। इसका कारण यह है कि—सम्पूर्ण जगत् केवल परमात्माके संकल्पसे उत्पन्न होता है और महाप्रलयमें केवल एक अद्वितीय परमात्मा विश्वनाथ अवशिष्ट रह जाते हैं। यदि जगत् किसी भिन्न वस्तुके सहारेसे रचित होता तो महाप्रलयके अन्तमें थोड़ा-बहुत बचा रहता किन्तु प्रकृति आदि किसी भिन्न वस्तुके सहारेसे जगत् रचित न होनेके कारण कुछ भी बचा नहीं रह सकता। जैसे भगवान् विष्णुके संकल्पसे उत्पन्न नरसिंह शरीरके अन्तर्धान होने के बाद उस शरीरका कोई भाग नहीं बचा था; किम्वा जिस प्रकार स्वप्नमें संकल्प रचित धन-माल घर जागनेके बाद थोड़ा भी बचा नहीं मिलता वैसे ही महाप्रलयके अन्तमें—जगत्के परमात्मामें लीन होनेके बाद—परमात्मा में सगुणता नहीं हो सकती, यह समझना चाहिए।

सृष्टिके पूर्व केवल एक अद्वितीय शुद्ध निर्गुण ब्रह्म मात्र था। प्रकृतिको ब्रह्म स्वरूपसे भिन्न मानलेने पर द्वैतभाव प्राप्त हो जाता है; प्रकृतिको स्वभावतः त्रिगुण-रूप मानकर ब्रह्मसे अभिन्न स्वीकार करलेने पर मिश्रित

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अद्वैत भाव प्राप्त होगा (अर्थात् ब्रह्मको त्रिगुणमय प्रकृतिके साथ मिश्रित स्वीकार करना होगा); और वेदान्त मतके अनुसार प्रकृतिको अनिर्वचनीय मानलेने पर भी भाव रूप वस्तु होनेके कारण **विशिष्ट अद्वैत भाव** सिद्ध होगा। छत्रके साथ छत्रधारी पुरुषकी तरह प्रकृतिके साथ मिले हुये ब्रह्मको विशिष्ट अद्वैतके रूपमें स्वीकार करने पर भी विचारकी दृष्टिसे द्वैत भाव ही सिद्ध होता है। किन्तु ये तीनों मतवाद हैं श्रुति सिद्धान्त के विरोधी। श्रुति कहती है—"सृष्टिके पूर्व एक अद्वितीय ब्रह्म ही था, वह केवल और निर्गुण था।" इसलिए पूर्व प्रदर्शित रीति अनुसार शक्तिको शक्तिमान्से अभिन्न मानना होगा। उसके परिणामसे **ब्रह्म निर्गुण सिद्ध होने के कारण केवल अद्वैत भाव की ही सिद्धि होगी।**

कोई कोई **प्रकृति और पुरुष इन दो वस्तुओंको** अनादि मान लेते हैं। कोई कोई प्रकृति, जीव और ब्रह्म इन तीन पदार्थोंको अनादि मानते हैं। कोई ब्रह्म, ईश्वर माया और जीव इन चार वस्तुको अनादि स्वीकार कर लेते हैं। कोई ब्रह्म, ईश्वर, माया, जीव, अविद्या और जगत् इन छः पदार्थोंको अनादि मानते हैं। किन्तु ये सब भेदवाद श्रुति सिद्धान्तके विरोधी हैं। अतः मुमुक्षु पुरुष को इनको ग्रहण करना नहीं चाहिए। श्रुतिमें कहागया है कि—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रश्न—कार्यद्वारा अदृष्ट कारणका केवल अनुमान मात्र किया जाता है; उसके बारेमें दृढ **निश्चय** नहीं हो सकता।

उत्तर—इस प्रकारकी शंकाको हटानेके लिए दृष्टान्त द्वारा निर्णीत सिद्धान्तको पुष्ट किया जाता है। अपने शरीररूप कार्यके द्वारा उसके कारण रूपसे अनुमान सिद्ध अपने पिताकी अस्तितामें सभी मनुष्योंका दृढ़ निश्चय हो जाता है। "पिता थे वा नहीं" इस प्रकार किसीकी भी शंका नहीं होती। उसी प्रकार यहाँ भी जगत् रूप कार्य के द्वारा परमेश्वरकी सत्ता सम्बन्धी दृढ़ निश्चय कर लेना आवश्यक है।

प्रश्न—कठ श्रुतिमें जगत्को सनातन, अनन्त, अव्यय और अनादि इस प्रकार बताया है। अतः जगत् ईश्वर द्वारा रचित नहीं है।

उत्तर—यह दृश्यमान जगत् प्रपञ्च अनादि नहीं हो सकता। क्योंकि सर्वत्र प्रत्यक्ष रूपसे उत्पन्न जगत्की अनादिता सिद्ध नहीं हो सकती। जो अनादि है वह उत्पन्न ही नहीं होता, जो उत्पन्न होता है वह अनादि नहीं हो सकता। श्रुतिमें जगत्को दीर्घकालीन प्रवाहरूप से ही अनादि कहा गया है। स्वरूपतः नहीं अर्थात् जगत्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रवाह दीर्घकाल तक चला आ रहा है। स्वरूपतः जगत् उत्पत्तिरहित नहीं है। इसीसे यही श्रुतिका तात्पर्य है, यह समझ लेना चाहिए।

इसमें श्रुति प्रमाण भी है—"हे सौम्य, सृष्टिके पूर्व एक अद्वितीय सद्रूप परमात्मा ही विद्यमान थे, उन्होने अनेक बार विचार किया—मैं बहुत हो जाऊँ (छान्दोग्य उपनिषद्)। ऐतरेय उपनिषद्में भी बताया है—"उन परमात्माने इच्छा की कि मैं जगत्की रचना करूँ तब उन्होंने जगत्की रचना की"। तैत्तिरीय उपनिषद्में बताया है कि "उन परमात्मासे पहले आकाश उत्पन्न हुआ"। भगवद्गीतामें भी कृष्ण भगवान्ने कहा—"हे अर्जुन! मेरी योनिरूप प्रकृतिमें मैं गर्भ धारण करता हूँ और बादमें पूर्ण भूत प्राणियोंकी उत्पत्ति होती है" इस प्रकार श्रुति और स्मृति शास्त्रमें—सृष्टिके आदिकालमें सर्वप्रथम परमेश्वरने जगत्का निर्माण आरम्भ किया था इस प्रकार बताया है। सृष्टिके शुरूमें कब परमात्माने जगत्का निर्माण आरम्भ किया था उसको नहीं बताया जा सकता है, तथापि सम्पूर्ण निर्मित पदार्थोंका दर्शन होनेके कारण जगत्का आरंभ होना अवश्य ही निश्चित है। अतः जगत्की अनादिता नहीं हो सकती। इस प्रकार समझना चाहिए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किसी वस्तुकी उत्पत्तिका काल विदित न हो इसीसे उसकी उत्पत्ति ही नहीं हुई है इस प्रकार नहीं कहा जा सकता जिस प्रकार पितामहके जन्मका काल पौत्रको ज्ञात न होने पर भी पितामहके जन्मका निषेध सिद्ध नहीं हो सकता। किसी पुराने वृक्षके बीजारोपणका ज्ञान न होने पर भी उसकी उत्पत्तिका अभाव उत्पन्न नहीं होता। इस प्रकार आरम्भकालके ज्ञान न होने पर भी जगत्की अनादिता सिद्ध नहीं होती, यह जानना चाहिए।

प्रश्न—जगत् यदि सादि है तब परमेश्वरकी सादिता सिद्ध होगी।

उत्तर—श्रुति स्मृतिमें—सृष्टिके पहले जगत्का अभाव बताया गया है "सृष्टिके पूर्व सूक्ष्म और स्थूल कोई पदार्थ नहीं था। अन्तरिक्ष लोक भी नहीं था। आकाश भी नहीं था और उससे भिन्न और कोई भी वस्तु नहीं थी"। श्वेताश्वतर उपनिषद्में कहा गया है कि—"सृष्टि के पहले केवल अन्धकार था" दिन और रात्री नहीं थी। किम्वा स्थूल किम्वा सूक्ष्म पदार्थ भी नहीं था। **केवल एक परमात्मा विश्वनाथ ही थे।** मनुस्मृति में भी बताया गया है कि सृष्टिके पहले यह सब अन्धकार था,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अविज्ञात था तर्क एवं ज्ञानका अयोग्य था। ब्रह्म सृष्टिके कर्ता होने पर भी जगत् रचनाके साथ उनका नित्य सम्बन्ध नहीं है, क्योंकि जगत्की रचना उनकी इच्छाके अधीन है। जिस प्रकार स्वर्णकार जन्मसे शुरू करके सदाकाल भूषण नहीं बनाता किन्तु कार्यवशात् कभी-कभी बनता है। उसी प्रकार विश्वनाथ भगवान् नित्य सृष्टि रचना नहीं करते हैं। अतएव जगत्की अनादिता सिद्ध नहीं है, इस प्रकार जानलेना आवश्यक है।

प्रश्न—"यह जगत् पहले सद्रूप था" इस श्रुति वचनके अनुसार सृष्टिके पहले भी जगत्की सत्ता प्रतीत होती है तब जगत् किस प्रकार अनादि न होगा ?

उत्तर—सृष्टिके पूर्व यह जगत् जगत्रूपसे विद्यमान था। ऐसा नहीं माना जासकता। किन्तु जगत् कारण-रूपसे ब्रह्म रूप ही था। यह मानना होगा। क्योंकि उस श्रुतिके उत्तरपदमें—"एक अद्वितीय था" इस वचन-के द्वारा एह ही ब्रह्मकी अस्तिता कथनकी गई है। यदि सृष्टिके पहले **ब्रह्मसे भिन्न जगत् विद्यमान रहता** तब द्वैत भावकी प्राप्ति हो जाती। एक अद्वितीय ब्रह्म था यह उक्ति सिद्ध नहीं होती।

"कार्य और कारण दोनों ही एक रूप होते हैं" इस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्याससूत्र (ब्रह्मसूत्र २।१।१४) के अनुसार कार्यकारण-का अभेद बोध करानेके लिए श्रुतिमें "यह जगत् था" इस प्रकार बताया गया है, जगत्के सद्भावको समझाने के लिए नहीं। कारण दशामें कार्यका अपने रूपसे सद्भाव नहीं होता—घटनिर्माणके पहले घट अपने रूपसे मृत्तिका में नहीं रहता, किन्तु केवल मृत्तिकामात्रसे विद्य-मान रहता है, उसी प्रकार सृष्टिके पूर्व जगत्रूप कार्य कारण ब्रह्मरूपमें विद्यमान था, जगत् रूपमें नहीं।

प्रश्न—अच्छा, त्रिगुणरूप सम्पूर्ण जगत् सहित एक ब्रह्म विद्यमान था यह कहना क्यों उचित न होगा ?

उत्तर—ब्रह्म निरवयव निर्गुण है, इस श्रुति सिद्धा-न्ताके साथ स्पष्ट विरोध होता है, अतः जगत् अनादि नहीं हो सकता, यह समझना चाहिए।

प्रश्न—बृहदारण्यक उपनिषद्में बताया गया है कि पहले यह जगत् सूक्ष्मरूपमें था, बादमें नामरूपके द्वारा प्रकट हुआ है। यजुर्वेदमें भी कहा गया है कि सूर्य चन्द्र पहले जिस रूपमें थे ईश्वरने पुनः उसी रूपमें उनकी रचना की है। इन सब वेद वचनोंके अनुसार यही सिद्ध हो जाता है कि यह जगत् पहले परमात्मामें सूक्ष्म रूपमें विद्यमान था बादमें भगवान् विश्वनाथ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

केवल आविर्भूतमात्र करते हैं पूर्वकी सृष्टिका निर्माण नहीं करते ।

उत्तर—पहलेसे ही विद्यमान जगत्को ईश्वर केवल आविर्भावमात्र करते हैं इस प्रकार यदि माना जाय तब ईश्वरको गौणभाव प्राप्त होता है मुख्य कर्ताभाव सिद्ध नहीं होता । पहले ही हम दिखा चुके हैं कि श्रुति और स्मृतिके अनुसार पहले परमेश्वरने जगत्की रचना की है । पहलेसे ही सूक्ष्मरूपसे विद्यमान जगत्का यदि ईश्वर आविर्भाव मात्र करते हैं तब ये सब श्रुति स्मृति वचन निरर्थक होते हैं और जगत्के मुख्य कर्ता न होनेके कारण ईश्वरका ईश्वरत्व भी नहीं रह सकता । अतः ईश्वर केवल जगत्को स्थूल रूपसे आविर्भाव करते हैं; इस प्रकार मानना ठीक नहीं है ।

❀ द्वितीय वर्णक समाप्त ❀

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तृतीय वर्णक

भगवान विश्वनाथ एक अद्वितीय और विश्वके निरपेक्ष निर्माता हैं

सूक्ष्मरूपसे विद्यमान जगत्का यदि विश्वनाथ भगवान् केवल स्थूल रूपसे आविर्भाव करते हैं यह माना जाता है तब उस सूक्ष्म प्रपंचका निर्माता और कोई है ऐसा मानना पड़ेगा। क्योंकि सूक्ष्म प्रपंच अपने आप उत्पन्न हो गया है ऐसा मान लेनेपर स्वभाववाद प्राप्त होगा जिसका पहले ही निराकरण किया गया है। अतः ईश्वरने पहले ही **इस जगतका निर्माण किया है, इस प्रकार निश्चय करना चाहिये।** "यह जगत् पहले सूक्ष्म-रूपमें था बादमें नाम और रूपद्वारा प्रकट किया गया है" और "सूर्य और चन्द्र पहले जिस प्रकारके थे वैसे ही सूर्य चन्द्रको पुनः बनाया था" इन सब श्रुति वचनका विषय कल्पान्तर (अन्य कल्प सम्बन्धी) सृष्टि है, आदि सृष्टि नहीं ऐसा जानना चाहिये।

प्रश्न—सूक्ष्म सृष्टिका कारण है एक ईश्वर, और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उसका सहकारी स्थूल रूपसे जगत्का आविर्भाव कर्ता दूसरा ईश्वर है इस प्रकार दो ईश्वर क्यों न माने जायँ ?

उत्तर—इसका कारण यह है कि ईश्वर निरपेक्ष है—अर्थात् सृष्टि रचनामें परमात्मा विश्वनाथको अन्य किसी की भी सहायता आवश्यक नहीं है, क्योंकि ईश्वर सर्वशक्तिमान हैं। अन्यकी अपेक्षा आवश्यक होनेपर परस्पर अपेक्षाशील दोनों ही ईश्वर नहीं हो सकेंगे क्योंकि जो अन्यकी अपेक्षा करता है वह स्वतंत्र नहीं है अतः वह ईश्वर नहीं बन सकता। राजा और मंत्रीकी तरह दोनों को सहकारी माननेपर भी वे दोनों बराबर नहीं हैं अतः दो ईश्वर नहीं हो सकते। अतः एक ही परमेश्वर सम्पूर्ण जगत्के कारण थे, इस प्रकार समझना चाहिये।

छान्दोग्य उपनिषद्में बताया गया है—हे सौम्य ! सृष्टिके पहले एक अद्वितीय सद्रूप परमात्मा ही थे और कुछ नहीं था।" श्वेताश्वतर उपनिषद्में भी कहा है—"एक ही परमात्मा देव सम्पूर्ण भूत प्राणियों में गूढ़ रूपसे स्थित होते हैं एक ही देव सम्पूर्ण दिशाओंमें व्यापक हैं" इन सब श्रुति वचनोंने सृष्टिके पहले एक अद्वितीय परमात्माका निरूपण किया है अतः दो ईश्वर नहीं हो सकते, यह समझना चाहिये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रश्न—जिस प्रकार अनेक मधुमक्खियाँ शहदका छत्ता बनाती हैं उसी प्रकार अनेक शक्तिमान् ईश्वर जगत् निर्माण करते हैं ऐसा क्यों नहीं माना जाय ?

उत्तर—दो ईश्वरकी तरह अनेक ईश्वरको मानना ठीक नहीं क्योंकि यह अप्रामाणिक है। अनेक ईश्वर बादमें श्रुति स्मृति पुराण और इतिहास में कहीं भी किसी प्रकारका प्रमाण नहीं मिलता। पुष्ट प्रमाणके बिना कभी भी किसी प्रकारसे किसी वस्तुकी सिद्धि नहीं हो सकती। अतः वेद आदि प्रमाणके अभाव होनेके कारण अनेक ईश्वर मानना ठीक नहीं।

इसके अलावा अनेक ईश्वर मानलें तब उनको न्यूनाधिक शक्तिशाली मानना होगा। जो न्यूनाधिक शक्तिशाली हों वे ईश्वर सिद्ध नहीं होते। परस्पर शक्तिशाली हों तब वे परस्पर एक अन्यकी सहायताकी अपेक्षा करेंगे, अतः सब ईश्वर नहीं हो सकते हैं। जो अन्यकी अपेक्षा करता है वह—अस्वतन्त्र होनेके कारण ईश्वर शब्दका वाच्य नहीं हो सकता (उसको ईश्वर नहीं कहा जा सकता)। "भगवान् विश्वनाथ अक्षर और परम स्वतन्त्र हैं।" "वे ईश्वरके भी परमेश्वर हैं," "उनके बराबर कोई नहीं है—उनसे श्रेष्ठ और कोई नहीं है,"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इन सम्पूर्ण श्रुतिवचनोंने ईश्वरको (विश्वनाथ भगवान-को) सर्वतन्त्र स्वतन्त्र कहा है। अतः एक ही विश्वनाथ इस जगत्के निर्माणकर्ता हैं, इस प्रकार निश्चय करना चाहिये।

प्रश्न—अच्छा, श्रुति स्मृति पुराणोंमें महादेव, ब्रह्मा, विष्णु आदिको भी ईश्वर बताया गया है, तब विश्वनाथ एक हैं यह कैसे सिद्ध होगा ?

उत्तर—वही एक परमेश्वर विश्वनाथके अंशरूप होनेके कारण ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदिकी ईश्वर स्वरूपता बताई गई है, यह जानना चाहिए। यद्यपि सभी जीव विश्वनाथ भगवानके अंशरूप हैं तथापि सत्व-गुणके आधिक्यवशात् ब्रह्मा, विष्णु, शिव, गणेश, शक्ति और सूर्य इन छः देवताओंमें ईश्वर शक्तिका विशेष अंश विद्यमान है। अतः वेद-शास्त्र पुराणमें उनका ईश्वरत्व निरूपित हुआ है। जिस प्रकार राजाके पुत्रको भी संसार-में राजाकी तरह माना जाता है, उसी प्रकार विष्णु शिव आदि भी ईश्वरके रूपमें परिगणित होते हैं। केवल इसीसे ईश्वरकी अनेकता सिद्ध नहीं होती। विष्णु शिव आदि सब एकही ईश्वरके अंश हैं। जैसे अनेक ज्वाला अग्निके अंश रूपमें परिगणित होती है अतः अग्नि अनेक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रूप नहीं है अतएव एकही विश्वनाथ भगवान हैं जगत् उत्पत्तिके कारण यह मानना चाहिये। कैवल्य उपनिषद्में उपदिष्ट हुआ है—वे परमात्मा विश्वनाथ ही ब्रह्मा, शिव विष्णुरूप और अविनाशी परम स्वतन्त्र हैं।"

प्रश्न—सृष्टिके शुरूमें कोई भिन्न वस्तु नहीं थी तब ईश्वर कहाँसे जगत् रचना की उपादान सामग्री संग्रहकर जगत्की रचना करते हैं ?

उत्तर—घट निर्माणके लिये कुम्भकारको जिस प्रकार मृत्तिका की आवश्यकता होती है उसी प्रकार ईश्वरको जगत् रचनाके लिये किसी भिन्न पदार्थकी आवश्यकता नहीं होती। क्योंकि ईश्वर सर्वशक्तिमान् है। ईश्वरमें सभी प्रकारका सामर्थ्य रहता है अतः किसी वाह्य सामग्री-के बिना ही वे जगत्का निर्माण करते हैं, यह जानना चाहिये।

प्रश्न—बाह्य सामग्रीके बिना विश्वनाथ किस प्रकार जगत्की रचना कर सकते हैं ? क्योंकि कोई भी वस्तु उपादान सामग्रीके बिना निर्मित नहीं हो सकती।

उत्तर—मकर जाल बनानेके लिये मुखसे सूत्र निकालता है और स्वयं ही जाल बनाता है। इसके लिये बाहरसे कोई भिन्न सामग्री संग्रह नहीं करता। अर्थात्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उस जालका उपादान कारण और निमित्त कारण दोनों ही कारण स्वयं ही है। उसी प्रकार ईश्वर भी जगत् रचना करनेके लिये स्वयं ही उपादान और निमित्त कारण होते हैं। यह समझना चाहिये। श्रुतिमें भी इसी प्रकार बताया है। वेदमें विश्वनाथको दोनों प्रकारका कारण बताया है। मुण्डकोपनिषद्में कहा है—जिस प्रकार मकर स्वयं ही जाल बनाता है और अपनेमें ही लय कर देता है, उसी प्रकार परमात्मासे यह सम्पूर्ण जगत् पैदा होता है। तैत्तिरीय उपनिषद्ने उपदेश दिया है—उन परमात्माने स्वयं अपनेको ही जगत्रूप बनाया है। ये सब श्रुतिवचन ईश्वरको जगत्का उपादान कारण एवं निमित्त कारण बता रहे हैं। अतः जगत्के निर्माण कार्यमें ईश्वरके लिये किसी भिन्न सामग्रीकी आवश्यकता नहीं है, इस प्रकार समझना चाहिये।

❀ तृतीय वर्णक समाप्त ❀

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चतुर्थ वर्णक

जगत् निर्माणका रहस्य

प्रश्न—सामग्री बिना ईश्वर किस प्रकार जगत् रचना करते हैं ?

उत्तर—परमेश्वर अपने संकल्पसे ही सम्पूर्ण जगत् का निर्माण करते हैं, इस प्रकार समझ लेना चाहिए। क्योंकि ईश्वरका संकल्प अत्यन्त बलवान् है। ईश्वर सत्य संकल्प है। वे जिस-जिस पदार्थको जैसा-जैसा बनानेकी इच्छा करते हैं तत् तत् पदार्थ तत् तत् रूपमें तत्कालमें उत्पन्न होता है। "उन ईश्वरने विचार किया कि मैं जगत्की रचना करूँ" इस प्रकार उन्होंने जगत्की रचनाकी श्रुतिमें इस प्रकार ईश्वरके संकल्पके अनन्तर उसी कालमें ही जगत्की उत्पत्ति बतलाई है। अतएव सम्पूर्ण पदार्थोंकी उत्पत्तिमें उपादान और निमित्त कारण ईश्वरका संकल्प ही है, यह जानना चाहिए।

जब लोकमें सिद्ध किम्वा तपस्वीके द्वारा पदार्थकी उत्पत्ति देखी जाती है—जिस प्रकार नृसिंहावतार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भगवान्ने अपने संकल्पके द्वारा शरीर निर्माण किया था; रासलीलामें श्रीकृष्णने अनेक रूप धारण किये थे; सौभरि ऋषिने अपनेको अनेक शरीरोंमें परिणत किया था; विश्वकर्माने तिलोत्तमा अप्सराकी सृष्टि की थी; दुश्शासनके द्वारा द्रौपदीका वस्त्र निरन्तर खींचे जाने पर भी बढ़ गया था—इस प्रकार देवता और मनुष्यके संकल्पों द्वारा पदार्थोंकी उत्पत्ति इतिहास, महाभारत और पुराणोंमें प्रसिद्ध है तब साक्षात् परमेश्वरके संकल्प द्वारा जगत्की रचना होनेमें क्या आश्चर्य है ?

प्रश्न—केवल चैतन्य रूप ईश्वरके संकल्पसे जड़ चेतनरूप जगत्की किस प्रकार उत्पत्ति हो सकेगी ?

उत्तर—ईश्वरका सामर्थ्य जीवकी तरह नहीं। **ईश्वरका मायाशक्ति रूप सामर्थ्य अत्यन्त भिन्न है। जिससे महान् दुर्घट कार्य भी सुघटित हो जाता है।** ईश्वर सत्य संकल्प हैं, अतः जिस समय उनकी जिस प्रकारके कार्यको उत्पन्न करनेकी इच्छा होती है उस समय तद्रूप जड़ किम्वा चेतनको तत्कालमें ही उत्पन्न कर देते हैं। अर्थात् ईश्वरका सामर्थ्य ही विलक्षण जगत्के निर्माणमें हेतु है, इस प्रकार जानना चाहिए।

कार्य कारण एक रूप होता है इसमें कोई नियम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नहीं है। चेतन ईश्वरके संकल्पसे जड़ रूप जगत्की उत्पत्ति हो सकती है। यदि कारण अपने कार्यके ही समान होता तब उसका कारण पन ही सिद्ध न होता; अतः उसमें कुछ विलक्षणताका होना उचित ही है। पानी शीतल होता है, उसका कारण अग्नि उष्ण है। वृक्ष विस्तारयुक्त होता है किन्तु उसका कारण बीज अत्यन्त छोटा होता है। इस प्रकार चेतन ईश्वरसे जड़ जगत् उत्पन्न होता है।

प्रश्न—इस जगत्की उत्पत्तिका रहस्य क्या है ?

उत्तर—वास्तवमें चेतनरूप परमात्मा विश्वनाथके संकल्पसे रचित सम्पूर्ण वस्तु चैतन्यरूपमात्र है; केवल जीवोंके व्यवहार सिद्धिके लिए ईश्वरकी इच्छासे उसमें जडपन प्रतीत होता है; जिस प्रकार हमारे स्वप्न-कालमें रचित अनेक वस्तु जड़रूप प्रतीत होती है, किन्तु वास्तवमें वह सब संकल्परूप होनेके कारण—चेतनरूप ही है। ईश्वर संकल्प और जीव संकल्पके भीतर भेद इतना ही है कि जीवके संकल्पद्वारा रचित वस्तु चिरकाल-पर्यन्त स्थिर नहीं रहती; ईश्वर संकल्पद्वारा रचित जगत् पदार्थ—ईश्वरका संकल्प दृढ़ होनेके कारण—चिरकाल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तक स्थिर रहता है और उसमें जीवोंका व्यवहार निर्वाह होता है।

प्रश्न—श्रेष्ठकर्मकारी मनुष्य उत्तम जन्म प्राप्त करलेता है और जो पाप कर्म करता है वह नीच योनीमें जाता है; इस प्रकारके श्रुतिवचनोंके अनुसार जीवके कर्मानुसार ही ईश्वरकी जगत् रचनामें प्रवृत्ति देखी जाती है, अपने संकल्पके द्वारा नहीं ?

उत्तर—जगत् रचना करनेके लिये भगवान् विश्वनाथको जिस प्रकार भिन्न उपादान सामग्रीका प्रयोजन नहीं होता उसी प्रकार जीवोंके कर्मोंकी अपेक्षा भी नहीं रहती। जीवोंके कर्मोंके अधीन होकर ईश्वर जगत्की रचना नहीं करते। क्योंकि वे अपनी सृष्टि रचनामें स्वतन्त्र हैं। वे यदि जीवोंके कर्मकी अपेक्षा करते तब उनका मुख्य सृष्टि कर्ताभाव और स्वतन्त्रता नहीं हो सकती। इसके अलावा सृष्टि रचनाके पहले कर्म करनेकी कोई सामग्री नहीं रहती, अतः कर्म नहीं हो सकता, यह पहले कह आये। भूमि, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा आदिके उत्पन्न होनेके बादही सम्पूर्ण जीवोंका कर्म संभव होता है, उसके पहले नहीं। ऊपर प्रदर्शित श्रुतिवचन अन्य कल्पविषयक हैं, इस प्रकार समझना चाहिये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"उन परमात्माने इच्छा की कि मैं अनेकरूपमें उत्पन्न हो जाऊँ" इस श्रुति वचनके अनुसार ईश्वर अपनी इच्छासे ही अपने संकल्पके द्वारा जगत् रचना करते हैं, इस प्रकार निश्चय करना चाहिये।

प्रश्न—जिस प्रकार बीजसे वृक्षका अंकुर उत्पन्न होता है पुनः वृक्षसे बीज पैदा होता है उसी प्रकार जगत् और कर्मका भी परस्पर अनादि सम्बन्ध है। अतः सृष्टि रचनामें कर्मकी अपेक्षा नहीं है, ऐसा नहीं कहा जाता।

उत्तर—यह ठीक नहीं है। क्योंकि वृक्ष पहले होता है और बीज बादमें। पहले सम्पूर्ण वृक्ष वनस्पतियाँ पृथिवीके साथ साथ ही उत्पन्न होती हैं; और बादमें उनके प्रवाहको चलानेके लिये ईश्वरकी इच्छासे उससे बीज प्रकट होता है, इस प्रकार जानना चाहिये। मुण्डक उपनिषद्में भी कहा गया है—जिस प्रकार पृथिवी से स्वभावतः सम्पूर्ण वनस्पतियाँ पैदा होती हैं, वैसे ही जीवित मनुष्यके केश किम्वा रोम उत्पन्न होते हैं। अर्थात् पहले सम्पूर्ण पदार्थोंका आकार उत्पन्न होता है और बादमें उनके प्रवाहको चलानेके लिये उससे बीज उत्पन्न होता है। ऐतरेय उपनिषद्में भी उक्त हुआ है कि पहले शरीर उत्पन्न होता है बीज नहीं; पहले जगत्का निर्माण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होता है और बादमें उसके प्रवाहको चलानेके लिये उसमें कर्मकी योजना होती है। मनुस्मृतिमें भी कहा गया है—सृष्टिके आदि में परमेश्वरने जिस जीवको जिस योनिके कर्ममें नियुक्त किया है बाद में वह जीव पुनः जगत्में उस योनिमें सृष्ट होकर वैसा कर्म करता है। अतः बीज और वृक्षके दृष्टान्त द्वारा जगत् और कर्मकी अनादिता नहीं हो सकती।

इसके अतिरिक्त कार्य कारणके नियम अनुसार जगत् और कर्मकी अनादिता सिद्ध नहीं होती; क्योंकि सर्वत्र जगत्में पदार्थोंकी उत्पत्तिमें कार्य कारणका नियम देखा जाता है। **पहले कारण होता है बादमें उसका कार्य होता है।** पहले मृत्तिका होती है बादमें घट उत्पन्न होता है सब जगह मृत्तिकासे घट उत्पन्न होता है; घटसे कभी भी मृत्तिका उत्पन्न नहीं हो सकती। उसी प्रकार पहले जगत्की सृष्टि और बादमें कर्मकी उत्पत्ति होती है; सृष्टिके पहले जीवका कर्म नहीं हो सकता। अतः जगत् रचनामें ईश्वरके लिए कर्मकी अपेक्षा नहीं हो सकती।

प्रश्न—ईश्वर कर्मकी अपेक्षा बिना किसी जीवको देवता, किसीको मनुष्य और किसीको पशु बनाते हैं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तब तो भगवान् विश्वनाथमें विषमता दोष उत्पन्न होगा।

यह ठीक नहीं है, क्योंकि जगत्की रचना कालमें पदार्थोंका ऊँचा पन नीचा पन आवश्यक होजाता है। यदि सम्पूर्ण जीव समान हैं तब जगत्का सम्पूर्ण व्यवहार नष्ट हो जायेगा। किसीको भी किसीकी अपेक्षा न होनेके कारण कोई भी किसीका कोई काम नहीं करेगा और इससे जगत्के रचना कर्ताकी मूर्खता प्राप्त होगी। क्योंकि उन्होंने निकम्मा जगत्की रचना की। अतः आवश्यक व्यवहारकी व्यवस्थाके लिए जगत्में ऊँच नीच जीव निर्माणमें ईश्वरको कोई दोष प्राप्त नहीं होता। जिस प्रकार कुम्भकार आवश्यक प्रयोजनके लिए छोटा बड़ा घट शराव आदि बनाता है, उसमें उसको विषमता रूप कोई दोष नहीं होता, इस प्रकार समझना चाहिए। इसके अलावा, सम्पूर्ण जीवके लिए सुख दुःखका समान अनुभव होनेके कारण ईश्वरमें विषमता आदि दोष प्राप्त नहीं होता।

(क) ब्रह्मासे प्रारम्भ कर कीट पर्यन्त **सभी जीव के लिए सर्वत्र सुख दुःखका समान रूपसे अनुभव होता** है, उसमें न्यूनाधिक भाव नहीं होता केवल बाहरके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शरीर, इन्द्रिय, खानपान आदि साधनमें जीवके भीतर परस्पर भिन्नता प्रतीत होती है। वास्तव स्वरूपमें उनका कोई भेद नहीं है; क्योंकि जिस प्रकार इन्द्रको अपनी स्त्री शची का आलिङ्गन करके आनन्द प्राप्त होता है उसी प्रकार कुत्ताको भी अपनी स्त्री का आलिङ्गन करके आनन्द अनुभव होता है। देवता अमृत पानकर जिस प्रकार तृप्त होते हैं उसी प्रकार पशुओंको भी हरे तृणोंसे तृप्ति मिलती है। फिर जगत्में जो ज्यादा महान् दिखाई देता है वह भी और किसीकी अपेक्षासे छोटा दिखाई पड़ता है; और जो ज्यादा छोटा है, वह भी किसी की अपेक्षामें बहुत बड़ा दिखलाई पड़ता है; और जो वस्तु एक जीवके लिये रूचिकारक होती है वह और किसीके लिए घृणायोग्य होती है। जो वस्तु एक व्यक्तिके लिए घृणायोग्य होती है वह औरोंके लिए रुचिकारक हो जाती है।

(ख) फिर क्षुधा, पिपासा, शीत, उष्णता, राग, द्वेष, जन्म, मरण, आधि, व्याधि, काम, क्रोध, लोभ, मोह, तृष्णा, आदि सब जीवोंमें समान रूपसे देखे जाते हैं; अतः वास्तवमें जीवोंके भीतर ऊँच नीच भाव नहीं है। विचार दृष्टिके द्वारा देख लेने पर ऊँच नीच भाव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नहीं रहता। इस प्रकार सभी जीव समान हैं। अतः विलक्षण जीव सृष्टिके निर्माता होनेके कारण कोई विषमता नहीं है, इस प्रकार जानना चाहिए।

❀ चतुर्थ वर्णक समाप्त ❀

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पञ्चम वर्णक

भगवान विश्वनाथ कौन हैं ?

(स्वरूप लक्षण निरूपण)

जगत्के कारण रूपमें—अनुमान द्वारा विश्वनाथ भगवान् की अस्तिताका निश्चय हुआ, किन्तु ईश्वरके स्वरूपको न जानने पर उनकी आराधना नहीं हो सकती, अतएव श्री विश्वनाथ परमात्माका स्वरूप निरूपित किया जा रहा है।

श्री परमेश्वर विश्वनाथका स्वरूप ज्योति रूप है, ऐसा जानना चाहिए। वेदमें विश्वनाथके स्वरूपको जयोतिर्मय कहा गया है। "उस ईश्वरको सूर्य आदि ज्योतिष्कोंका भी ज्योति और अमृत आयुरूप मानकर देवता गण उपासना करते हैं," "ज्योतिष्कोंका भी परम ज्योति एक रूपसे विद्यमान है। उसके द्वारा ब्रह्माण्ड दूर तक व्याप्त हो रहा है।" उस परमात्माके प्रकाशित होनेके बाद ही सूर्य आदि प्रकाशित होते हैं और उसके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकाश द्वारा यह सम्पूर्ण जगत् प्रकाशित हो रहा है। इस प्रकार अनेक वेद वचनों के द्वारा भगवान् विश्वनाथ को ज्योति रूपमें निरूपण किया है।

उन परमात्मा विश्वनाथकी स्वरूप भूत, ज्योति, अग्नि, सूर्य आदि की तरह भौतिक नहीं है। किन्तु वह चैतन्य रूप है। अर्थात् वेदन रूप जो ज्ञान है उसीका स्वरूप है। सम्पूर्ण जीवोंमें जानना रूप जो ज्ञान है वह ईश्वरकी ज्योतिका ही अंशरूप है। "ब्रह्म सत्य ज्ञान और अनन्त है", "ज्ञान ही ब्रह्म है"—इन सब श्रुतियोंमें विश्वनाथ भगवान्को ज्ञान स्वरूप प्रतिपादित किया गया है।

विश्वनाथ सत्य (अविनाशी)

उन विश्वनाथ भगवान्की चैतन्य स्वरूपता सत्य-रूप और विकार रहित है। जो पदार्थ विकारयुक्त होता है उसका विनाश होता है, जैसे यह शरीर। एक अवस्थासे अन्य अवस्थाको प्राप्त होनेका नाम विकार है। वह विश्वनाथके स्वरूपमें नहीं है अतः विश्वनाथ अविनाशी हैं। बृहदारण्यक उपनिषद्में कहा गया है—"हे मैत्रेयि! यह आत्मा अविनाशी और क्षय वृद्धि रहित है" श्वेताश्वतर उपनिषद्में कथन हुआ है—वह परमेश्वर प्रकृति आदि नित्य पदार्थोंके भीतर भी नित्य और मन,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बुद्धि आदि चेतन पदार्थोंके भीतर भी चेतन हैं। भगवद्-गीतामें भी कहा है—"जिस परमात्माके स्वरूप द्वारा यह सम्पूर्ण जगत् व्याप्त हो रहा है, उसको तुम अविनाशी समझ लो।" पातञ्जल योग सूत्रमें भी कहा गया है—वे ईश्वर पूर्वकालके ब्रह्मा आदि के भी गुरु हैं, क्योंकि उनका कभी भी कालके द्वारा अन्त नहीं होता" इस प्रकार ईश्वर अविनाशी होनेके कारण उनके सत्यत्वको निश्चित करना चाहिए।

भगवान् विश्वनाथ सर्वातिशय प्रेमके आस्पद हैं। और सम्पूर्ण जीवोंके जीवनके हेतुभूत हैं। वेही आत्मरूपसे सबोंके सुखके हेतु-भूत हैं। अतः उनका स्वरूप आनन्दमय है, इस प्रकार समझना चाहिये। बृहदारण्यक उपनिषद्में कहागया है—"हे मैत्रेयि! पुत्र पुत्रके लिये प्रिय नहीं होता किन्तु अपने (अपने आत्म-स्वरूप) के लिये पुत्रप्रिय होता है। धन धनके लिये प्रिय नहीं होता किन्तु अपनी आत्माके लिये अर्थात् अपने लिये धन प्रिय होता है। अतः यह आत्मा सबसे प्रिय है, वह पुत्रसे प्रिय है और धनसे भी प्रिय है।" इन सभी श्रुतियों में ईश्वरांशरूप आत्माके परम प्रेमका आस्पदपन प्रसिद्ध है। "ब्रह्म आनन्द है", ब्रह्म

भगवान् विश्वनाथ आनन्द स्वरूप हैं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्ञान और आनन्द स्वरूप है, "यही आत्मा सम्पूर्ण जीवोंको आनन्द प्रदान करता रहता है", "इन परमात्माके आनन्द-के लेशमात्रको सम्पूर्ण जीव भोग करते हैं"—इन श्रुतियोंमें भी ईश्वरका स्वरूप आनन्दमय है, ऐसा निरुपण किया गया है। इस प्रकार सच्चित् आनन्दमयरूपमें विश्वनाथ-के स्वरूपको जानना चाहिये।

सत् चित् आनन्द ये भिन्न भिन्न प्रकारके स्वरूप नहीं है। सत् और आनन्द ये दो पद चिद्रूपके ही विशेष-रूप हैं। अर्थात् विश्वनाथका स्वरूप सर्वदा स्थायी है अतः **सत्** माना जाता है। सम्पूर्ण जीवोंके सुखके हेतु हैं, अतः **आनन्दमय** हैं। जिस प्रकार अग्नि प्रकाश स्वरूप है, उसका स्वभाव दाह-कता है, वैसे ही विश्वनाथका स्वरूप चैतन्य है और उनका स्वभाव आनन्द है और उनका विशेषण है सत्। इस प्रकार चैतन्यमय यह एक ही प्रकार भगवान् विश्वनाथका स्वरूप है, ऐसा निश्चय करना चाहिये (प्रथम भाग सप्तम वर्णक देखिये)।

प्रश्न—परमात्माका यदि एक ही प्रकारका स्वरूप है तब वेदान्त शास्त्रमें ब्रह्म और ईश्वर भेद से शुद्ध और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शवल परमात्माके ये दो प्रकारके स्वरूप क्यों बतलाये गये ?

उत्तर—अवस्था भेदसे ही एक ही परमात्माके दो प्रकारके नाम प्रसिद्ध हो गये हैं, स्वरूप भेदसे नहीं। जब सृष्टिके आदिमें परमात्मा विश्वनाथ निर्विकार (शान्त) रूपसे सर्वत्र समान रहते हैं तब ब्रह्मनामसे प्रतीत होते हैं और जब जगत् रचना कर सम्पूर्ण जीवोंके भीतर अन्तर्यामी रूपसे स्थित होते हैं—तब उनका ईश्वरनाम बन जाता है। जैसे एक ही पुरुष जब समाधिमें स्थित होता है तब योगी नामसे कथित होता है, जब यज्ञादि कर्मोंका अनुष्ठान करता है तब कर्मी नामसे प्रसिद्ध होता है। **इस प्रकार परमात्माका स्वरूप एक ही प्रकारका है।** पुल्लिङ्ग (ईश्वर आत्मा) नपुंसकलिङ्ग (ब्रह्म) सगुण निर्गुण आदि सम्पूर्ण विशेषण एक ही ईश्वरके हैं, इस प्रकार समझलेना चाहिये।

प्रश्न—मायामें ब्रह्मका प्रतिबिम्ब पड़ जाने पर ईश्वर बनता है, क्या यह ठीक नहीं है ?

उत्तर—ब्रह्म और ईश्वरकी एकता निरूपणके द्वारा इस नवीन वेदान्त मतका निराकरण किया जाता है। "ब्रह्म एक और अद्वितीय है"—इस श्रुतिवचनके द्वारा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सृष्टिके पूर्व एक ब्रह्मके अतिरिक्त अन्य वस्तुका निषेध किया गया है; अतः अन्यका अन्य वस्तुपर प्रतिबिम्ब निषिद्ध हो गया है। जिस प्रकार अपनेमें अपना प्रतिबिम्ब सम्भव नहीं, वैसे ही अपनी शक्तिपर अपना प्रतिबिम्ब नहीं पड़ सकता। जैसे अग्निकी अपनी दहन शक्ति पर प्रतिबिम्ब नहीं होता वैसे मायामें ब्रह्मका प्रतिबिम्ब सम्भव नहीं है—इस प्रकार मायाभास निराकृत हो गया।

माया शक्ति ब्रह्मका स्वरूप ही है, ब्रह्मसे भिन्न नहीं। श्वेताश्वतर उपनिषद्ने ईश्वरको मायी (माया नामक शक्तियुक्त) कहा है, मायामें प्रतिबिम्बित चैतन्यको (मायाके आभाससे उत्पन्न चैतन्यको) नहीं। ईश्वरमें उपाधिकी कल्पना करना उचित नहीं। भगवान् विश्वनाथका स्वरूप निष्कल, निष्क्रिय, शान्त, प्रकृतिनिर्मल और निरञ्जन है (अर्थात् उपाधि रहित शुद्ध चैतन्य है)। **अतः भगवान् विश्वनाथका स्वरूप शुद्ध सच्चिदानन्द-स्वरूप है।** "प्रकृति स्वयं ही माया और अविद्या बनती है" "माया आभासके द्वारा जीव और ईश्वरको बनाती है" यह श्रुतिवचन केवल स्थूल बुद्धियुक्त जिज्ञासुओंके लिये है, अर्थात् जिनको साक्षात् अद्वैत ब्रह्म तत्त्वका बोध नहीं हुआ है उनके लिये उक्त श्रुतिवचन है। आशय यह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है कि यह श्रुतिवचन जीव और ईश्वरकी अविद्या तथा माया उपाधि कल्पना कर पुनः भागत्याग लक्षणाके द्वारा शुद्ध ब्रह्म स्वरूपका बोधन करानेके लिये है, इस प्रकार जानना चाहिये। अतः विश्वनाथ भगवानको मायाभास (माया प्रतिबिम्बित ब्रह्म) कहना उचित नहीं है। इस प्रकार मायाभास निराकृत हो गया।

❀ पञ्चम वर्णक समाप्त ❀

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

षष्ठ वर्णक

भगवान् विश्वनाथ के अन्य अन्य लक्षण

भगवान् विश्वनाथका स्वरूप लक्षण निरूपित हो गया है। अब जिज्ञासुओंको विशेष बोध दिलानेके लिए भगवान्के अन्य अन्य लक्षणोंका निरूपण किया जाता है।

(क) ब्रह्माण्डके चराचर जीवोंमें जो क्रिया होती है, वह ईश्वरके चैतन्यके संयोग द्वारा ही संभव है। जड़ पदार्थकी जो क्रिया देखी जाती है, अर्थात् वर्षा होना, नदी प्रवाहित होना आदि क्रिया होती है, उसमें प्रत्यक्ष चैतन्य-का संयोग न होने पर भी ईश्वरीय संकल्पकी प्रेरणासे ही वर्षा आदि क्रिया होती है। इस प्रकार सर्वत्र ईश्वरीय चैतन्यके संयोगसे क्रिया शक्तिका स्फुरण होता है। इसी-से क्रिया प्रवृत्तिके हेतुरूपसे सर्वत्र ईश्वर चैतन्यका ज्ञान सम्पादन करना आवश्यक है (सर्वत्र चैतन्य स्वरूप ईश्वरका अनुभव करना आवश्यक है)।

(ख) भगवान् विश्वनाथ (ईश्वर चैतन्य) ही सम्पूर्ण चराचर जगत्को धारण कर रहे हैं, इस प्रकार जानना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चाहिये। आकाशमें सूर्य, चन्द्र, ग्रह, तारा आदि जो परिभ्रमण कर रहे हैं और जल स्थल आकाशमें विचरण-शील सम्पूर्ण जीवोंके जो शरीर हैं वे सब सर्वदा प्रकाश-मान विश्वनाथ भगवानके आश्रयमें स्व-स्व व्यवहारमें नियोजित हो रहे हैं। इसी तरह वृक्ष लता सम्पूर्ण वनस्पतियाँ विश्वनाथके सहारेसे ही सर्व प्रकारसे फल-फूल युक्त और वृद्धि प्राप्त होती हैं। उन परमेश्वरसे वियुक्त होनेपर आकाश स्थित मण्डल जीवोंके शरीर और वनस्पतियाँ एक क्षण भी नहीं रह सकतीं; अर्थात् मण्डल तत्कालमें ही नीचे गिर जायेगा, शरीर मृत्युप्राप्त होगा और वृक्ष लतायें शुष्कता प्राप्त होंगी। अतः सम्पूर्ण जगत्के आधार एक भगवान विश्वनाथ ही हैं, यह जानना चाहिये।

(ग) जैसे अपने शरीरमें भोजन पान चलन वर्तन आदि क्रियाओंसे ईश्वर चैतन्यका अनुभव होता है, वैसे ही अन्यत्र भी चराचर दृश्य और दृश्य शरीरमें सर्वत्र चैतन्य रूप भगवान् विश्वनाथकी व्यापकता निश्चय करना चाहिए। **जिस प्रकार सम्पूर्ण जीव शरीर पाञ्च-भौतिक हैं उसी प्रकार सम्पूर्ण शरीर चैतन्ययुक्त है।**

(घ) एक मृत्पिण्डके जानलेने पर जिस प्रकार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मृत्तिका द्वारा निर्मित घट शराव आदिका अर्थात् सकल मृन्मय पात्रोंका ज्ञान हो जाता है, वैसे ही एक शरीरमें चैतन्यका अनुभव हो जाने पर सम्पूर्ण शरीरमें स्थित ईश्वर चैतन्य (भगवान् विश्वनाथ) का ज्ञान हो जाता है।

(ङ) जीवसे भिन्न रूपमें शरीरमें विश्वनाथ अवस्थित नहीं हैं, इस प्रकार जानना चाहिए। "शरीर-रूप एक वृक्षमें जीव और ईश्वर रूप दो पक्षी रहते हैं, उनके भीतर जीव कर्म फलको भोगता है और ईश्वर केवल साक्षी रूपसे स्थित रहते हैं"—इस श्वेताश्वतर उपनिषद् वाक्यने अपने स्वरूपसे ईश्वरका शरीरमें अवस्थान-प्रदर्शन नहीं किया है किन्तु ईश्वर की असंगता को दिखाया है। अर्थात् जीव ही वास्तवमें साक्षीस्वरूप है, अर्थात् विश्वनाथ हैं—यह दिखाया है।

सर्वव्यापक ईश्वरकी परिच्छिन्नता नहीं है, अतः शरीरमें भगवान् विश्वनाथके स्वरूप से भिन्न रूपमें जीव-का अवस्थान संभव नहीं हो सकता। जिस प्रकार घटमें घटाकाशका महाकाशसे भिन्न अपने रूपमें रहना संभव नहीं। क्योंकि ईश्वरका अन्तःकरण उपाधि नहीं है, जिससे परिच्छिन्नता हो सके। अतः जीवात्माके साथ—जीवके शरीरमें—ईश्वरका भिन्न रूपसे रहना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संभव नहीं है, इस प्रकार जानना चाहिए। अर्थात् जीव वास्तवमें असंग चैतन्य स्वरूप है (गीतामृत पृ० ४१८–४१९, ४४२--४२३)। शरीरमें विश्वनाथ भगवान् पृथक् रूपसे अवस्थित नहीं हैं, क्योंकि ईश्वर ही जीव रूपसे शरीरमें प्रवेश किये हुए हैं, इस प्रकार श्रुतिमें कहा गया है। छान्दोग्य उपनिषद्में कहा गया है—ईश्वरने विचार किया है "मैं जीवात्म रूपसे प्रवेश कर नाम रूपको प्रकट करूँगा।" इस वचनके द्वारा **शरीरमें ईश्वरका प्रवेश होना जीव रूपमें ही ज्ञात होता है,** अपने पूर्णरूपसे नहीं (शरीरमें ईश्वरकी स्थिति जीवसे पृथक् रूपसे नहीं), इस प्रकार जानना चाहिए।

भगवान् विश्वनाथ सर्वव्यापक हैं। अतः सम्पूर्ण शरीरमें उनकी समीपता विद्यमान है। अतः सानिध्य-वशात् अन्तर्यामी रूपसे स्थित ईश्वरको सर्व शरीरोंमें स्थित है ऐसा शास्त्रोंमें बताया गया है। जिस प्रकार सम्पूर्ण घटमें महाकाशकी समीपता है और इसी कारण-घटमें आकाश प्रविष्ट है (स्थित हो रहा है) ऐसा माना जाता है, (वास्तवमें अपरिच्छिन्न आकाशका घटमें प्रवेश होना असंभव है)। इसी प्रकार भगवान् विश्वनाथ परिछिन्न रूपसे शरीरमें अवस्थान नहीं करते

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हैं। जिस प्रकार घटाकाश वास्तवमें महाकाश ही है, उसी प्रकार जिसको जीव कहा गया है, वह वास्तवमें असङ्ग चैतन्यमात्र है, इस प्रकार समझना चाहिए।

जीव और ईश्वरके भीतर कोई भेद नहीं है; क्योंकि दोनों ही सच्चिदानन्द स्वरूप हैं, अतः एकरूप ही हैं। जिस प्रकार घटका पानी और समुद्रका पानी छोटे बड़े उपाधिवशात्—भिन्न भिन्न प्रतीत होता है, तथापि पानी-मात्ररूप होनेके कारण उनके भीतर कोई भेद नहीं है। उसी प्रकार जीव और ईश्वरके भीतर भी कोई भेद नहीं (जीव चैतन्य और ईश्वर चैतन्यके भीतर कोई भेद नहीं है), इस प्रकार जानना चाहिए। अतः जीव चैतन्यके ज्ञान द्वारा ईश्वर चैतन्यका बोध सम्भव होता है (चैतन्य वस्तु किम्वा अनुभव अखण्ड एक रस स्वयं प्रकाशमान है; अतः जीव चैतन्य और ईश्वर चैतन्य एक और भेद शून्य है)। जिस प्रकार प्रदीप और सूर्यका परिमाण छोटा बड़ा होने पर भी अग्नितत्व रूपसे दोनोंका स्वरूप एक ही है (भिन्न भिन्न नहीं)। वैसे ही जीव परि-च्छिन्न है, और ईश्वर व्यापक है तथापि सच्चिदानन्द-रूपसे दोनों एक ही हैं, यह मानना चाहिए। "उस ईश्वरके अवयवरूप जीवके द्वारा यह सम्पूर्ण जगत् पूर्ण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हो रहा है", "हे अर्जुन, इस जगत्में मेरा ही अंश सनातन जीवरूप होगया है"—इस श्रुति स्मृति वचनके अनुसार यह जीव ईश्वरका ही अंशरूप है। अतः एक शरीरमें स्थित जीव चैतन्यके ज्ञान द्वारा सर्वत्र व्यापक ईश्वर चैतन्यका ज्ञान सहज हो जाता है।

यह जीवात्मा परमेश्वर विश्वनाथका अंशभूत है। अतः और कोई भिन्न वस्तु न होनेके कारण अनेक श्रुति स्मृति वचन द्वारा जीव और ईश्वरकी एकता निरूपित की गई है। "इस सम्पूर्ण जगत्को ईश्वररूप ही जानना चाहिए", "यह सम्पूर्ण जगत् ब्रह्मरूप है", "तुम ब्रह्म हो", "प्रज्ञान ब्रह्म है", हे अर्जुन, सकल भूत प्राणियोंके हृदयमें मैं ही जीवात्मरूपसे अवस्थित हूँ", "यह जीव ब्रह्मरूप ही है, और कोई वस्तु नहीं है।"

जीव और ईश्वर स्वरूपतः समान होनेपर भी व्यष्टि और समष्टि भावको लेकर उनकी विलक्षणता देखी जाती है। व्यष्टि भाव-युक्त जीव तुच्छ आकारवान् होनेके कारण अल्प ज्ञान युक्त और अल्पशक्ति है। समष्टि ईश्वर बृहत् आकारवान हैं अतः सम्पूर्ण ज्ञान, सम्पूर्ण शक्ति गुणके साथ संयुक्त होता है। जिस प्रकार प्रदीप एक घटको प्रकाश करता है, और सूर्य ब्रह्माण्डको प्रकाश करता है,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वैसे ही जीव और ईश्वरकी अल्पज्ञता, सर्वज्ञता, अल्प-शक्तिता, सर्वशक्तिता आदि विलक्षणता होती है।

समष्टि भावयुक्त ब्रह्म-चैतन्य पूर्ण शक्तिमान् होनेसे ईश्वर नामसे अभिहित होता है—ब्रह्म चैतन्यके **समष्टि भागमें ही पूर्ण शक्ति विद्यमान रहती है। जगत्के निर्माण द्वारा ईश्वरकी पूर्ण शक्तिमत्ता निश्चित होती है।** ईश्वर मुख्य रूपसे जगत्के निर्माता हैं, ब्रह्मा विष्णु आदि देवता जगत्के मुख्य कर्ता नहीं हैं। **जगत्के मुख्य निर्माता होनेके कारण ईश्वरकी सर्वज्ञता निश्चित हो जाती है। विचारके बिना ही सदा-काल भगवान् विश्वनाथका ज्ञान सर्वप्रकार परिस्फुट होता है। इस सर्वज्ञताके लिये ईश्वर नित्य मुक्त हैं। ईश्वर सभी जगत्के आदि कारण हैं। वे स्वयं अनादि हैं।** वे और किसीके कार्य नहीं हैं। (भगवान् विश्वनाथ हैं स्वतः सिद्ध)। सम्पूर्ण जगत्के अवधि परमात्मा विश्वनाथ हैं।

भगवान् विश्वनाथ सर्वव्यापक हैं, क्योंकि उनका स्वरूप आन्तर है। वे आकाश आदि पञ्च महाभूतोंके कार्य हैं, अतः विश्वनाथ भगवान्का अनन्तपन प्रसिद्ध है। जब ईश्वर द्वारा रचित आकाश वायु आदि पदार्थोंका कहीं भी अन्त नहीं होता, तब उनके कारण जो भगवान्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हैं वे तो अनन्त ही होंगे । तैत्तिरीय उपनिषद्में परमात्माको सत्य, ज्ञान और अनन्त स्वरूप बताया गया है।

भगवान् विश्वनाथ अन्तर्यामी हैं। सभी जीवोंके शुभा-शुभ कर्मफलके प्रदाता होनेके कारण उनकी अन्तर्यामिता सिद्ध निश्चित हो जाती है। क्योंकि ईश्वर साक्षात् स्वयं आकर किसी जीवको कर्मफल प्रदान नहीं करते; किन्तु उस जीवके अन्तःकरणको प्रेरणा करके ही फल देते हैं। अन्तःकरणको प्रेरणा करना अन्तर्यामीके बिना सम्भव नहीं है। बृहदारण्यक उपनिषद्में कथित हुआ है—जो सम्पूर्ण भूत प्राणियोंको भीतरसे प्रेरणा करते हैं, वे अविनाशी अन्तर्यामी परमात्मा हैं। एकमात्र भगवान् विश्वनाथ ही सर्वज्ञ हैं, अतः वे ही सब जीवोंके शुभा-शुभ कर्मफलको जानते हैं। कर्मको जो जानते हैं वे ही कर्मफलको प्रदान कर सकते हैं। श्वेताश्वतर उपनिषद्में बताया गया है—वे ईश्वर कर्मके साक्षी (कर्म फल प्रदाता) हैं।

परमात्मा विश्वनाथकी नियति अनुसार जब किसी जीवके लिये मृत्यु कारक कर्मफल प्रदानका समय होता है, तब उसकी बुद्धिकी प्रेरणा होनेसे ही वह जीव विष भोजन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आदि काममें प्रवृत्त होता है, और अपनेको मारदेता है **श्री विश्वनाथ भगवान्के संकल्पके अनुसार ही कर्म जीव की बुद्धिको प्रेरित करता है।** यजुर्वेदमें कहा गया है "उस परमात्मा देवके तेजका मैं ध्यान कर रहा हूँ जो मेरी बुद्धिको प्रेरित करते हैं"। भगवान् विश्वनाथने सृष्टिके आदिमें कर्मफल प्रदान करनेका नियम बनाया है। उस नियम (नियति)के अनुसार कर्मफल मिल ही जायेगा। जो जीव जैसा कर्म करता है, उसी प्रकार उस कर्मके परिपक्व हो जाने पर उसका फल मिल जाता है। उसमें ईश्वरको नित्य प्रति परिश्रम नहीं करना पड़ता।

आदि सृष्टिकालमें कर्मके बिना ही विश्वनाथ भगवान् जगत् निर्माण करते हैं। जगत् रचनाके अनन्तर जीवके कर्मानुसार ही ईश्वर शुभा-शुभ कर्मफल प्रदान करते हैं, इस प्रकार जानना चाहिए। ईश्वरके कार्यको देख लेने पर उनके दयालु स्वभावका स्पष्ट निश्चय किया जाता है। पृथ्वी पर बोये गये बीज सौ गुना, हजार गुनाके रुपये उत्पन्न होते हैं। यदि ईश्वर दयालु न होते तो एक ही दाना उत्पन्न होता। जीवोंके कर्मके बिना ही पहलेसे ही रचित सूर्य चन्द्र जल वायु आदि उपयोगी पदार्थ प्रत्येक जीवोंकी सहायता करते हैं—यह है ईश्वरकी परम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दयालुता । भगवान् विश्वनाथ अपने शरणागत भक्त जीवके अनेक जन्मोंके पाप दोषको क्षमाकर उसको मुक्ति प्रदान करते हैं । इस प्रकार ईश्वरकी दयालुता सर्वत्र वेद शास्त्रोंमें प्रसिद्ध है । पुराण शास्त्रोंमें कहा गया है—"शरणागत जीव यदि एक ही बार" मैं आपका ही बनना चाहता हूँ "इस प्रकार प्रार्थना करता है तब उसको सम्पूर्ण भूत प्राणियोंसे अभय प्रदान करता हूँ—यह मेरा व्रत है ।"

विश्वनाथ भगवान्की जगत् रचना और उसके प्रवाहको सञ्चालित रखना निरर्थक नहीं है । यह सम्पूर्ण जगत् परमात्माका लीला विलास है । लीला विलासके लिये निर्मित वस्तु निरर्थक नहीं कही जा सकती, किन्तु मनोरञ्जक होनेके कारण सम्पूर्ण वस्तु सप्रयोजन है ।

स्वतन्त्र विहारके लिये ईश्वर अपनी लीला करते हैं, किसी स्वार्थके लिये नहीं, इस प्रकार समझना चाहिए । ब्रह्म मीमांसामें व्यासजीने कहा है—राजा आदि लोगोंकी तरह ईश्वर स्वतन्त्र जगन्निर्माण रूप लीला करते हैं, (ब्रह्मसूत्र २।१।३३) ।

अपनी शक्तिके उपयोगके लिये भगवान्के द्वारा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जगत्की रचना करना और उसके प्रवाहको चलाना आदि लीला करना उचित ही है, इस प्रकार समझना चाहिए।

यदि भगवान् विश्वनाथ जगत् रचना आदि कार्य न करें तो उनकी जड़ता प्राप्त होती है, (अर्थात् परमेश्वरको जड़ मानना पड़ेगा)। क्योंकि जो पदार्थ जगत् में कोई कार्य नहीं करता, क्रियाशून्य होनेके कारण वह जड़ ही होता है—जिस प्रकार काष्ठ पाषण आदि पदार्थ क्रिया शून्य होनेके कारण जड़ कहे जाते हैं, किन्तु ईश्वर चेतन स्वरूप हैं, अतः उनको जगत् रचना और उसकी रक्षा आदि कार्य करना उचित ही है।

भगवान् विश्वनाथ भक्तजनकी रक्षा, मुमुक्षु जनको ज्ञान प्रदान और मुक्त पुरुषको मुक्ति प्रदान, केवल इन निवृत्ति कर्मोंका ही विधान नहीं करते हैं बल्कि वे जगत्-की रचना, पालना आदि प्रवृत्ति कार्यके भी कर्ता हैं। ईश्वर सर्वशक्तिमान् हैं, अतः छोटा बड़ा सम्पूर्ण कार्य उनके लिये बराबर है। प्रपञ्च रचना आदि प्रवृत्ति कर्म और कोई नहीं कर सकता ईश्वर ही करते हैं। अतः जगत्-रचना, जगत् पालन, जीवोंके लिये कर्म फल प्रदान आदि लीला विहार आदि करना ईश्वरके लिये उचित ही है, इस प्रकार समझना चाहिए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जगत्की उत्पत्ति प्रलय आदि कार्यमें ईश्वरको कोई दोष प्राप्त नहीं होता। क्योंकि वे सम्पूर्ण कार्योंमें सर्वदा असंग रहते हैं। वे जीवकी तरह कर्म-फलमें लिप्त नहीं होते। जीव देह, इन्द्रिय आदि संघातमें अहंभाव-पूर्वक कर्म करता है और उससे लिप्त होता है। किन्तु ईश्वरका अहंभाव नहीं है अतः वे कर्मसे लिप्त नहीं होते। बृहदारण्यक उपनिषद्में कहा गया है—"परमात्मा पुरुष असंग हैं, वे लिप्त नहीं होते।" गीतामें भी कहा गया है—'हे अर्जु, मुझे कर्म लिप्त नहीं करता, क्योंकि कर्म फलमें मेरी इच्छा नहीं रहती।"

ईश्वरका स्वरूप ज्ञान कभी भी लिप्त नहीं होता। अतः उनका कर्मके साथ सम्बन्ध नहीं हो सकता, इस प्रकार जानना चाहिए। मायासे मोहित होकर जीव सर्वदा सांसारिक विषयमें आसक्त होनेके कारण अपने स्वरूप ज्ञानसे रहित होता है (अर्थात् जीवके लिये आत्मस्वरूपका विस्मरण होता है) किन्तु ईश्वर नित्य शुद्ध-बुद्ध मुक्त स्वरूप हैं। अतः जगत् रचना, प्रलय आदि कर्म कर लेने पर भी अपने स्वरूपका ज्ञान विस्मृत नहीं होता (अर्थात् भगवान् विश्वनाथका ज्ञान सर्वदा अखण्ड एकरस रहता है); उनका जगत् रचना आदि कार्यमें संसर्ग दोष नहीं हो सकता।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यह जगत् भगवान् विश्वनाथका लीला रूप हैं, वास्तवमें दुःखरूप नहीं है। क्योंकि यह सम्पूर्ण जगत् जीवोंका अभीष्ट (प्रिय) और आनन्द रूप है। दुःख रूप वस्तु किसीके लिये भी प्रिय नहीं हो सकती। जीव-के साथ ईश्वरकी किसी प्रकारकी शत्रुता नहीं है, अतः जीवोंके लिये उन्होंने दुःख रूप जगत्की रचना नहीं की है। यदि यह जगत् दुःखरूप होता तब इस संसारमें कोई भी जीव एक क्षण भी जीवित रहनेकी इच्छा नहीं करता। किन्तु सभी जीवोंके मनमें सर्वदा इस प्रकार इच्छा बनी रहती है कि "मैं सर्वदा जीवित रहूँ, कभी भी मेरी मृत्यु न हो"। इससे जाना जाता है कि यह जगत् दुःख रूप नहीं है, किन्तु यह सुख रूप है। केवल अपने प्रमादवश जीव कभी कभी दुःखका अनुभव करता है।

नरक, कारागार, जरा, रोग आदि पाप निवृत्तिके हेतु भूत होनेके कारण परिणाममें सुखके ही साधन होते हैं। आध्यात्मिक, आधिदैविक दुःख भोग भी पाप निवृत्तिके हेतु हैं अतः सुखके साधन होते हैं। इसलिये सम्पूर्ण जगत्को सुख रूप निश्चय करना चाहिए।

यद्यपि सभी जीवोंके भोगके लिये ही भगवान् विश्वनाथने शब्द, स्पर्श आदि विषयोंका निर्माण किया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है, और **विषय भोग मात्रसे** जीव दोषभागी भी नहीं होते तथापि विषयोंमें अत्यन्त आसक्ति करना ही दोषका कारण है। क्योंकि शब्द, स्पर्श आदि विषयमें सर्वदा आसक्त होकर जीव विषयादिका सम्पादन और सेवनमें तत्पर होकर परमार्थ साधनसे विमुख होता है। फलतः परमार्थ लाभसे वञ्चित होकर तथा शास्त्रकी मर्यादाका उल्लंघन कर विषयोंका सेवन करनेसे दोषीपन प्राप्त होता है। अतः आसक्ति परित्यागपूर्वक ईश्वरीय आज्ञारूप शास्त्र मर्यादाका कभी भी उल्लंघन न करके विषय भोग किया जाय तो दोषकी प्राप्ति नहीं होगी, इस प्रकार जानना चाहिए।

तब भगवद् गीता (२।६२-६३) और अष्टावक्र गीता (१।२) ने विषय चिन्तन किम्वा विषय सेवन के लिये क्यों निषेध किया है? गीतामें कहा गया है—"विषयोंके ध्यान कर लेने पर उसमें आसक्ति होती है।" अष्टावक्र गीतामें जनकको कहा गया है—"विषयको विषकी तरह त्यागना चाहिए। वेदान्त आदि शास्त्रोंमें जो विषय भोगका निषेध किया गया है, उसका उद्देश्य **जन्म-मरणरूप संसार बन्धनसे मुक्त होनेकी जिसकी इच्छा है उसके लिये वैराग्य उत्पन्न कर देना है,** सभी जीवोंके लिये विषयोंका निषेध करना नहीं, इस प्रकार समझना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चाहिए। इसका कारण यह है कि **जीवोंकी मुक्ति वैराग्यके अधीन है**। सांसारिक विषयोंमें आसक्त मनुष्यों-के लिये श्रवण मनन आदि मोक्ष साधन सम्भव नहीं है। वैराग्य युक्त मनुष्योंकी ही मुक्ति हो सकती है। कठोपनिषद्में उक्त हुआ है—जिस समयमें पुरुषके हृदयसे सम्पूर्ण कामनायें निवृत्त हो जाती हैं, उसी समयमें मुक्ति प्राप्त हो जाती है—इस शरीरमें ब्रह्मस्वरूप प्राप्त हो जाता है। महाभारत मोक्ष पर्वमें कहा गया है—इन्द्रियाँ और इन्द्रियोंके विषय वैराग्यवान् पुरुषके समीप नहीं आ सकते, वह इन्द्रिय और अन्तःकरणसे रहित होकर मोक्ष प्राप्त कर लेता है।

शङ्का—संसार यदि सुखरूप हुआ और शास्त्रमर्यादा के अनुसार विषय भोग कर लेने पर भी दोष प्राप्त नहीं हुआ, तब मोक्षका क्या प्रयोजन हुआ ?

समाधान—विवेकी पुरुष अधिक सुख पानेके लिये मोक्ष पदकी इच्छा करता है। जिस ब्रह्मानन्दके एक अंशको पाकर संसारके सब भूत प्राणी आनन्दका अनुभव करलेते हैं, साक्षात् उस ब्रह्म स्वरूपकी प्राप्ति होने पर अर्थात् मोक्षपद प्राप्त करने पर सुखकी अधिकता सहजमें ही अनुमानित होती है। इसलिये सांसरिक विषय सुखसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अधिक सुखाभिलाषी पुरुष मुक्तिकी इच्छाकरता है; जगत्-के दुःख रूप होनेके कारण मुक्तिकी इच्छा नहीं करता, इस प्रकार जानना चाहिए।

केवल सुखकी अधिकताके लिये मुक्तिकी इच्छा विवेकी पुरुष नहीं करता, किन्तु **मोक्ष सुख अविनाशी है, इसलिये विवेकी पुरुष मोक्षकी अभिलाषा करता है।** विषय सुख तो थोड़े समय तक ही रहता है। स्वर्गादि सुख भी विनश्वर है। अतः विवेकी पुरुष विषय सुखकी इच्छा नहीं करता।

ब्रह्म नित्य अविनाशी स्वरूप है, और उसके साथ सम्बन्धके द्वारा मोक्ष सुख नित्य निरन्तर एक रससे स्थित है। अतः उसकी प्राप्तिके लिये मुमुक्षु पुरुष अभिलाषा करता है, इस प्रकार जानना चाहिए।

❀ षष्ठ वर्णक समाप्त ❀

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सप्तम वर्णक

भगवान् विश्वनाथकी आराधना और फल

विश्वनाथ भगवान् जगत्की रचना कर जीवके लिये अनेक प्रकारके भोग्य पदार्थ और भोगायतन नाना प्रकारके शरीरोंका निर्माण करते हैं। उसके भीतर विशेषकर मनुष्य शरीरोंमें पशु पक्षी आदि से ज्यादा ज्ञान प्रदान कर विशेष उपकार किया है और मनुष्यको जलचर, थलचर और नभचर सम्पूर्ण जीवोंका राजा बनाया है। अतः मनुष्यके लिये अवश्य ईश्वरकी (विश्वनाथ भगवान्की) आराधना करना उचित है। अन्यथा कृतघ्नता दोष प्राप्त होगा।

भोग और मोक्ष दोनोंकी प्राप्तिके एकमात्र कारण भगवान् विश्वनाथ हैं। इसीसे ईश्वरकी आराधना करना योग्य है। ब्रह्मलोक पर्यन्तका भोग और कैवल्य पर्यन्तका मोक्ष—ये दोनों ही ईश्वरकी आराधनासे प्राप्त होंगे।

कर्म, उपासना और वेदान्त शास्त्रोंके विचार आदि पुरुषार्थ करनेसे ही भोग मोक्षकी प्राप्ति नहीं हो सकती

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्योंकि जीव परतन्त्र है, ईश्वरके अधीन होनेके कारण ईश्वरके द्वारा ही जीवको भोग और मोक्ष प्राप्त होना सम्भव है। कौषीतकी उपनिषद्में कहा गया है—"वे ईश्वर ही उस जीवको शुभकर्म कराते हैं, जिसको स्वर्गादि ऊपरके लोकमें पहुँचानेकी इच्छा करते हैं। वे ईश्वर ही उस जीवसे अशुभ कर्म कराते हैं, जिसको नरक आदि नीचेके लोकमें पहुँचानेकी इच्छा रखते हैं।" महाभारत मोक्षपर्वमें कहा है—"यह अज्ञानी जीव स्वयं सुख दुःख भोग नहीं कर सकता; वह ईश्वरकी प्रेरणासे स्वर्ग किम्वा नरकमें जाता है।"

शङ्का—जीव परतन्त्र है, वह किस प्रकार ज्ञान करेगा ?

समाधान—क्योंकि वह अपना अहित कर्माचरण करता है। वह यदि स्वतन्त्र होता तब जिस प्रकार उसका अहित होता है, वैसा आचरण नहीं करता। कोई भी अपनी अवनती नहीं चाहता। सम्पूर्ण जीव अपनी उन्नति किम्वा सुख चाहते हैं। यह जानकर भी जब जीव नरकादि अनेक मार्ग पर प्रवृत्त होता है तब जीव की परतन्त्रता ही सूचित होती है। महाभारत में दुर्योधन कहता है—"मैं धर्मको जानता हूँ किन्तु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उसमें मेरी प्रवृत्ति नहीं होती और अधर्मको भी मैं जानता हूँ किन्तु उससे मेरी निवृत्ति नहीं होती। मेरे हृदयमें कोई देवता स्थित होकर मुझे जिस प्रकार प्रेरणा करता है मैं वैसा ही करता हूँ"।

जीव जिस कामको जिस तरह करना चाहता है वह हर हालतमें उस प्रकार नहीं कर सकता। कभी-कभी उससे विपरीत भी हो जाता है। इससे ज्ञात होता है कि जीव परतन्त्र है।

जीव तीन प्रकारके दुःखसे पीड़ित रहता है; प्रयत्न के द्वारा एक दुःखके हट जाने पर भी और नया दुःख उपस्थित होता है। जीव यदि स्वतन्त्र होता तब वह उन सम्पूर्ण दुःखोंसे क्लेश नहीं पाता और उन दुःखोंको मूल सहित विनष्ट कर देता, किन्तु इस प्रकार नहीं देखा जाता है। अतएव जीव परतन्त्र है।

स्वतन्त्र पुरुष औरोंसे नहीं डरता। किन्तु जीव नाना प्रकार व्यवहारमें आसक्त होकर भी स्त्री आदि विषयोंमें निरन्तर रमण करके भी मृत्युके नामको सुनते ही अत्यन्त भय प्राप्त होता है और काल द्वारा आक्रान्त होकर कुटुम्ब धन आदि सम्पूर्ण प्रिय पदार्थोंसे वियुक्त हो जाता है। **मृत्युतुल्य काल प्राप्त होने पर एक क्षण**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भी इस लोकमें नहीं रह सकता। अतः यह जीव परतन्त्र है।

शङ्का—जीव परतन्त्र होनेपर भी ईश्वरकी कृपासे ही उसको भोग और मोक्ष मिलता है इस प्रकारका नियम तो नहीं है। क्योंकि अन्य देवताओंके द्वारा भी उसको भोग और मोक्ष प्राप्त होता है। इस प्रकार पुराण, इतिहास आदि अनेक स्थलपर सुना जाता है।

समाधान—यद्यपि अन्य शिव, विष्णु, ब्रह्मा, सूर्य आदि देवता ईश्वरके अंशरूप हैं अतः वे आराधनाके अयोग्य नहीं हैं तथापि ईश्वरके बराबर नहीं हो सकते। क्योंकि उनका सामर्थ्य ईश्वरके बराबर नहीं है। देवताओंकी शक्ति परिमित है। ईश्वर अनन्त शक्तिके भण्डार हैं। अतः ईश्वरकी सर्वोत्कृष्टता उपयुक्त है। देवताओंका जो वरदान आदि सामर्थ्य है उसको उन्होंने ईश्वरसे ही प्राप्त किया है (गीता ७।२२, ९।२)। **अतः मुख्य रूपसे ईश्वरकी आराधना करना योग्य है।**

ईश्वरकी आराधना और अन्य देवताओंकी आराधनाका फल समान नहीं हो सकता। बहुत जन्मों तक यज्ञ, तप आदि कर्मके **अनुष्ठान अनन्तर देवताओंकी आराधनासे जो फल प्राप्त होता है वह केवल स्वरूप-**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चिन्तन मात्रसे प्राप्त होता है। अथर्व शिखोपनिषद्में कहा गया है—एक क्षण ओंकार द्वारा ईश्वरका ध्यान करलेने पर सौ यज्ञोंका फल प्राप्त होता है।

यह ईश्वरकी आराधना देवताओंकी आराधनासे कठिन नहीं है। ईश्वरकी आराधना तो केवल एकाग्र मनके द्वारा ही सहज रूपसे हो सकती है। अन्य देवताओं की आराधनामें जिस प्रकार भिन्न-भिन्न अनुष्ठान हवन, बलिदान, तर्पण आदि कर्म आवश्यक होते हैं, वैसे ईश्वरकी आराधनामें नहीं। ईश्वरकी आराधना तो किसी बाह्य सामग्रीके बिना केवल एकाग्र मनके द्वारा सुसाध्य होती है। यद्यपि यज्ञ, दान, तप आदि बड़े-बड़े कठिन कर्म भी ईश्वरार्पण बुद्धिसे अनुष्ठित होने पर ईश्वर आराधनके उपयोगी होते हैं तथापि जिस प्रकार एकाग्र मनके द्वारा चिन्तन करलेने पर ईश्वरकी प्रसन्नता होती है, वैसे यज्ञादि कर्मोंके द्वारा नहीं होती। योग-वाशिष्ठमें कहा गया है—"सर्वव्यापक अन्तर्यामी आत्मा का ध्यान ही उपहार है और ध्यान ही उनका परम-पूजन है। ध्यानके बिना और किसी उपायसे आत्माकी प्राप्ति नहीं हो सकती।" वेद शास्त्रोंमें जो कहा गया है कि यज्ञ, तप आदि महान् कर्म भी आराधनाके लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपयोगी होते हैं, वह केवल विक्षिप्त चित्त पुरुषके लिये ही कहा गया है, एकाग्रचित्त पुरुषके लिये नहीं।

भगवान् विश्वनाथकी आराधनामें किसी जाति गुण आदिका नियम नहीं है। सभी जीव उनकी आराधना कर सकते हैं। गीतामें बताया है—(९।३२) हे अर्जुन स्त्री, वैश्य, शूद्र तथा अन्य योनियोंमें उत्पन्न जीव मेरी शरणमें आने पर परम गति प्राप्त करलेते हैं।

परमेश्वर चिन्तनका नाम **उपासना** है। एकाग्र मनके द्वारा सर्वव्यापक ईश्वरका स्मरण करना आवश्यक है। वेद और अन्य शास्त्रोंमें वर्णित ईश्वरकी सर्वज्ञता, सर्वशक्तिमत्ता आदि दिव्य गुणोंका मनके द्वारा बारम्बार स्मरण करना चाहिए। इस विचित्र जगत्की रचनासे परमात्माकी सर्वज्ञता, सर्वशक्तिमत्ता आदि गुणोंका ग्रहण करना चाहिए। ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् सबोंके अन्तर्यामी तथा सर्वव्यापक हैं—इस प्रकार अपने मनमें ईश्वरके गुणोंका चिन्तन करना चाहिए। इस प्रकार जो भक्त ईश्वरके दिव्य गुणोंका नियमित चिन्तन करता है। उस उपासकके ऊपर विश्वनाथ भगवान्की कृपादृष्टि होती है, इस प्रकार जानना चाहिए।

सबके लिये साधारणरूपसे यह आराधनाका विधान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है। अब उत्तम अधिकारीके लिये विशेष प्रकारकी आराधना वर्णित है।

योग शास्त्रमें जो उत्तम आसन प्राणायाम आदि बताया गया है। वह नियमानुसार किया गया यही ईश्वरका निरन्तर ध्यान है। नित्य प्रति इसको प्रेमपूर्वक करना चाहिए।

प्रश्न—ईश्वरका ध्यान किस तरह किया जाय ?

उत्तर—ईश्वरके ज्योतिः स्वरूपका दर्शन करना चाहिए। यजुर्वेदमें कहा गया है—"सूर्यादि ज्योतियोंके ज्योति अमृत रूप परमेश्वरकी उपासना देवता करते हैं।"

ध्यानके विशेष अभ्यासके द्वारा चित्त-वृत्ति अन्तर्मुख होने पर योगीके शरीरके भीतर विद्यमान आनन्दका अनुभव होता है। इस आत्मानन्दका अनुभव बहिर्मुख मनुष्योंके लिये सम्भव न होने पर भी योगियोंका ध्यानकालमें इसका अनुभव होता है।

इसके बाद नित्य ध्यानाभ्यासके फलसे सर्वव्यापक परब्रह्म परमेश्वरका जो परम दिव्य ज्योति है उसका प्रकाश होता है। मुण्डकोपनिषद्में कथित हुआ है—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"उस निष्कल परमात्माको ध्यायमान पुरुष देखता है।" कठोपनिषद्में कहा गया है—उस परमात्माको सूक्ष्म-दर्शी पुरुष सूक्ष्म-बुद्धिके द्वारा देखता है। महाभारतमें उक्त हुआ है—"जिस परमात्म ज्योतिको ध्यानपरायण योगी लोग दर्शन करते हैं, उनको नमस्कार करते हैं।" ध्यानमें स्थित होकर स्थिर चित्त योगी पुरुष जिसका दर्शन करते हैं। इत्यादि श्रुति स्मृतिके वचन ईश्वरको योगी पुरुषोंकी दिव्यदृष्टिके विषयके रूपमें कथन करते हैं (ईश्वर विज्ञान पृ० १७-१८ देखें)।

जो श्रुति वचन ईश्वर स्वरूपको दृष्टिके अविषयके रूपमें कथन कर रहा है उसका प्रयोजन साधारण मनुष्यों के लिये चर्ममय नेत्रोंकी विषयताका निषेध करनेमें मात्र है—ज्ञान योगियोंकी दिव्यदृष्टि द्वारा ब्रह्म ज्योति दर्शनके निषेधमें नहीं। इस प्रकार कठोपनिषद्में बताया है—"परमात्माको नेत्रों द्वारा देखना सम्भव नहीं है, बल्कि जिसकी शक्तिको पाकर चक्षु इन्द्रिय रूपको देखती है।

दिन प्रतिदिन **ध्यानके अभ्यास हो जाने पर उस ब्रह्म ज्योतिका प्रकाश क्रम-क्रमसे विस्तार-विस्तार बढ़ता जायेगा।**

यह ब्रह्म ज्योति कैसी है? यह ईश्वरकी स्वरूप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भूत ज्योति है (भौतिक ज्योति नहीं है) । ब्रह्म ज्योति अखण्ड चिद्रूप किम्वा अखण्ड ज्ञान प्रकाश स्वरूप है ।

ईश्वर आराधनाका फल

परमात्माके दर्शन मिलजाने पर कभी भी कर्म बन्धन नहीं प्राप्त होगा । ज्ञानवान् पुरूषोंका कर्म बन्धन विनष्ट हो जाता है । भगवान् विश्वनाथके दर्शन हो जाने पर (आत्म स्वरूपके साक्षात्कार हो जाने पर) सम्पूर्ण संशय निवृत्त होगा । क्योंकि वस्तुका प्रत्यक्ष अनुभव हो जाने पर फिर उसके बारेमें किसी प्रकार संशय नहीं रह सकता ।

मुण्डक उपनिषद्में भी बताया गया है—उस ईश्वर के दर्शन मिलने पर उस पुरूषके हृदयकी सम्पूर्ण ग्रन्थियाँ टूट जाती हैं और सम्पूर्ण संशय विनष्ट हो जाते हैं तथा सकल कर्मोंका क्षय हो जाता है ।

इस प्रकार भगवान् विश्वनाथकी आराधनाका फल, उनकी ज्योतिःस्वरूपके दर्शन और उस दर्शनका फल बताया गया है । अब **व्युत्थान** कालमें उस ईश्वरकी आराधनाका उपयोगी कर्तव्य-विशेषको दिखायेंगे ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ईश्वरकी आज्ञाका पालन करना ही उनकी आराधनाका अंगरूप है। चारों वेद, योग, वेदान्त दर्शन, मनु याज्ञवल्क्य आदि स्मृति—ये सब परमार्थके उपदेश होनेके कारण शास्त्र नामसे कथित होते हैं। **यह सब ईश्वर की आज्ञा है।** स्मृति और दर्शन वेदरूप ईश्वर की आज्ञाके अनुसार ही निर्मित हुए हैं, स्मृति और दर्शनको भी ईश्वरकी आज्ञा माननी चाहिए। किन्तु वेद विरुद्ध स्मृति और दर्शनको ईश्वरकी आज्ञाके रूपमें नहीं माना जाता है। **वेद शास्त्रोंमें विहित कर्मोंका विधिपूर्वक आचरण और वेदशास्त्रों में निषेध किये गए कर्मोंका सर्वप्रकारसे वर्जन करना ईश्वराज्ञाका पालन है।** यद्यपि फलोन्मुख प्रारब्ध कर्मोंका निवारण सम्भव नहीं है तथापि कर्तव्य नवीन कर्ममें ही मनुष्यको पुरुषार्थ करना चाहिए। इसमें मनुष्यकी स्वतन्त्रता है। नवीन कर्तव्य कर्ममें पूर्वकृत कर्म बाधा नहीं दे सकता, क्योंकि पुरुषार्थके द्वारा पूर्वकृत कर्मकी वासनाको **जीत कर अपने कार्यमें सफलता अवश्य प्राप्त को जा सकती है।** पुरुषार्थ करना जीवके अधीन की बात है। अतः जीवकी स्वतन्त्रता समझ लेनी चाहिए। इसलिये शास्त्रविहित कर्म करनेके लिये एवं प्रतिषिद्ध कर्मके त्यागके लिये जीवको विशेष प्रयत्न करना चाहिए। योगवाशिष्ठमें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कहा गया है—"शुभ और अशुभ दोनों मार्गोंमें कर्मवासना रूप नदी प्रवाहित हो रही है– उसको पुरुषार्थके द्वारा शुभ मार्गकी ओर लगाना चाहिए"।

किस लिये पुरुषार्थ किया जाय? उसका उत्तर यह है कि मनुष्य पशु-पक्षी सब जीवोंका हमेशा हित करना चाहिए, यह मानव कर्तव्य वेद शास्त्रोंमें विहित है। **जीवोंके हितके लिये ही शास्त्रोंमें इन सम्पूर्ण धर्मों-का निरूपण किया गया है।**

ईश्वराज्ञा पालनके लिये मनुष्यको मन वाणी और शरीरोंके द्वारा सर्वत्र सर्वदा और सर्वप्रकारसे जीवोंके हितार्थ आचरण करना चाहिए और जीवहिंसा आदि पाप, कर्म कदापि नहीं करना चाहिए।

ईश्वरकी आराधनामें सत्संग ही मुख्य कारण है। क्योंकि सत्संगके बिना किसी जीवको कहीं भी ईश्वर स्वरूपका ज्ञान नहीं हो सकता। कठ उपनिषद्में बत-लाया गया है—"हे पुरुष, तुम पुरुषार्थके बलसे खड़े हो जाओ और अज्ञान रूप निद्रासे जागो, सज्जनके पास पहुँचकर ज्ञानको सीखो, क्योंकि परमात्माके स्वरूपको जान लेना अत्यन्त कठिन है"।

सत् पुरूषके संगतमें बैठकर परस्पर ईश्वरके विषय-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में अनुसन्धान करना चाहिये; अर्थात् परमेश्वरकी प्रसन्नता किस प्रकार प्राप्त हो, उसका स्वरूप क्या है ? और किस प्रकार उसको जाना जा सकता है ?—इस प्रकारकी चर्चा करनी चाहिए, परस्पर मिलकर विचार करना चाहिए। श्रेष्ठ पुरुषोंसे प्रश्न कर निश्चय कर लेना चाहिए।

परमेश्वरकी स्वतन्त्रता, सर्वशक्तिमत्ता, जगत्-कारणता, चराचर जीवोंकी पालकता आदि दिव्य गुणोंकी परस्पर मिलकर चर्चा, विचार विनिमय आदि करना चाहिए।

सत्संग समाप्त होनेके पश्चात् एकान्त स्थानमें रहकर **सत्संगमें जो परमात्माका स्वरूप सुना गया था, स्थिर चित्तमें निरन्तर उसका मनन करना चाहिए।** अर्थात् मनन और निदिध्यासन कर **परमात्म स्वरूपके बारेमें अपने चित्तमें दृढ़ निश्चय करना चाहिए।** बृहदारण्यक उपनिषद्में बताया गया है—"हे मैत्रेयी ! आत्माको श्रवण मनन और निदिध्यासन द्वारा देखना चाहिए।"

यह चराचर सम्पूर्ण जगत् केवल ईश्वरके संकल्प द्वारा रचित हुआ है, अतः यह केवल ब्रह्ममें कल्पनामात्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है, वास्तवमें ब्रह्मसे भिन्न यह कोई सत्य वस्तु नहीं है। जिस प्रकार स्वप्नावस्थामें स्वप्नावस्थाके जीवके संकल्प द्वारा रचित पदार्थ सत्य नहीं होता, उसी प्रकार ईश्वर के संकल्प द्वारा रचित जगत् भी सत्य नहीं है।

इस प्रकार सम्पूर्ण जगत् एवं जीवात्मा भगवान् विश्वनाथसे भिन्न नहीं है, अतः सर्वत्र चराचर जगत्में एक अद्वैत तत्वको देखना चाहिए।

"एक ही अद्वितीय ब्रह्म विद्यमान है। उसमें नाना-भाव कुछ भी नहीं है। यह सम्पूर्ण जगत् परमात्मारूप ही है।" इत्यादि श्रुतिवचनके अनुसार सर्वत्र एक ब्रह्म-को ही देखना चाहिए—अर्थात् सब जीवको सर्वत्र ब्रह्म भावनाके द्वारा समदृष्टि पूर्वक देखना चाहिए। कोटि जन्मान्तरोंसे चित्तमें आरूढ़ जन्मान्तरीय द्वैतवासना जल्दी निवृत्त नहीं हो सकती। बृहदारण्यक उपनिषद्में भी कहा गया है—"श्रवण करना चाहिए, मनन करना चाहिए और निदिध्यासन करना चाहिए।" योगवाशिष्ठ में रामको उपदेश दिया गया है—"जो बहुत जन्मोंकी संसार वासना दृढ़ होकर स्थित है वह दीर्घ कालीन तत्वज्ञानके अभ्यास बिना शान्त नहीं हो सकती।" ब्रह्म मीमांसामें भी भगवान् व्यासने लिखा है—(ब्रह्म

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूत्र ४।४।१)—"तत्व ज्ञानका बारबार अभ्यास करना चाहिए," क्योंकि छान्दोग्य उपनिषद्में उद्दालक आरुणिने अपने पुत्र श्वेतकेतुको अधिक बार उपदेश दिया था—(वेदको कर्मकाण्ड और ज्ञानकाण्ड पृष्ठ ५१-६५ देखिये)।

इस प्रकार अद्वैत ब्रह्म दर्शनका अभ्यास दृढ़ होने पर जीवका राग और द्वेष निवृत्त हो जाता है। ज्ञान दृष्टिमें जब सर्वत्र भोक्ता और भोग्य पदार्थको अपने स्वरूपसे अभिन्न देखा जाता है तब उसमें राग नहीं हो सकता। बृहदारण्यक उपनिषद्में बताया गया है—"जब जीव अपने आत्म स्वरूपको अपरोक्षरूपसे जान लेता है तब किस वस्तुकी इच्छा करके शरीरको कष्ट देगा?" इसी प्रकार "यह मेरी ही आत्मा है" ऐसा जान लेने पर शत्रु आदिमें द्वेषभाव नहीं रहता।

रागद्वेषके अभावमें जीवके पाप और पुण्य निवृत्त हो जाते हैं।

पूर्वजन्ममें सञ्चित ज्ञानी पुरुषका पाप पुण्यरूप कर्म तत्व-ज्ञानके प्रभावसे समूल नष्ट हो जाता है। तत्व ज्ञान प्राप्त होनेके पश्चात् ज्ञानी पुरुष द्वारा प्रारब्ध कर्म वशात् किये गये शुभा-शुभ नवीन कर्मसे ज्ञानी पुरुष

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लिप्त नहीं होते । प्रारब्ध कर्मका योगद्वारा क्षय हो जाने पर जीवको कैवल्य मोक्ष प्राप्त हो जाता है । स्थूल सूक्ष्म शरीर रूप उपाधिका परित्याग कर जब जीवात्माको परब्रह्मके साथ अभेद रूपसे स्थिति होती है उसको "कैवल्य मोक्ष" कहा गया है ।

❀ सप्तम वर्णक समाप्त ❀

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भगवान् विश्वनाथ का स्वरूप

ग्रन्थ रत्नके प्रकाशके लिए सहयोग करनेवासे सज्जनों की नामावली

१.	पं० रुद्रशंकर पौडेल	चुँदी रम्घा	५०।
२.	श्री टीकाराम पौडेल	,, ,,	३०।
३.	श्री शिवभक्त आचार्य	,, ,,	६०।
४.	श्री शिवशंकर आचार्य	,, ,,	४०।
५.	श्री मुक्तिनाथ आचार्य	,, ,,	४०।
६.	श्री गिरिराज आचार्य	,, ,,	३०।
७.	श्री कोश पाणि आचार्य	,, ,,	२०।
८.	श्री माधव लाल न्यौपाने	,, ,,	५०।
९.	श्री कृष्णदत्त सापकोटा	,, ,,	३०।
१०.	श्री ढवु न्यौपाने	,, ,,	१०।
११.	श्री तारानाथ न्यौपाने	,, ,,	३०।
१२.	श्री मुक्तिनाथ हडखोले	,, ,,	१५।
१३.	श्री क्षेत्री जी	,, ,,	१०।
१४.	वक्लाङका अन्य भक्तिमतीहरू	,, ,,	२०।
१५.	श्री ऋतुमाया पण्डित	,, ,,	५०।
			४८५।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१६.	श्री ज्ञानहरि पण्डित	,, ,,	१५।
१७.	श्रीमती सावित्रा देवी पण्डित	,, ,,	५।
१८.	श्री हरि पण्डित	,, ,,	१५।
१९.	श्रीमती लीलावती पण्डित	,, ,,	५।
२०.	श्री विष्णुहरि नरहरि पण्डित	,, ,,	५।
२१.	श्री रामचन्द्र शरच्चन्द्र पण्डित	,, ,,	४०।
२२.	श्री सु० शालिग्राम पण्डित	,, ,,	२०।
२३.	श्री सु० कृष्णप्रसाद पण्डित	,, ,,	१०।
२४.	श्री केदारनाथ ,,	,, ,,	५।
२५.	श्री रुद्रनाथ ,,	,, ,,	५।
२६.	केशरी माया श्रेष्ठ वन्दिपुर	,, ,,	१०।
			१२५।
			४८५।
			६१०।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाल्मीकिविद्यापीठपुस्तकालयः

प्रत्यावर्तनतिथिः		

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

- अखिल अद्वैत विश्वविद्यालयके लिए स्वीकृत :

२६. गीताको भूमिका
२७. गीता रहस्य
२८. मोक्षको अनन्य मार्ग
२९. सूत्र प्रस्थान
३०. चतुस्सूत्री
३१. ज्ञानसिद्धान्ति
३२. योगसिद्धि
३३. पराशान्ति
३४. सुषुप्ति र सृष्टि
३५. कुरुक्षेत्र र साक्षात्कार
३६. अद्वैत सर्वस्व
३७. स्वरूपानुभव (हिन्दी)
३८. साक्षात्कार रहस्य विवेचन
३९. अद्वैत रत्न संरचना
४०. जीवन्मुक्ति सिद्धि
४१. भगवान् विश्वनाथका स्वरूप (हिन्दी)
४२. अद्वैत चिन्तामृत
४३. लघु वेदान्त अय
४४. सृष्टि समीक्षा (ज्ञानालोक)
४५. अद्वैत तात्पर्य
४६. ईश्वर विज्ञान
४७. मोक्षोपाय लघु चन्द्रिका (हिन्दी)
४८. गीता १३ अ. से-१८ अ. तक
४९. परमार्थ पत्रावली
५०. वेदान्त विज्ञान (हिन्दी)

- प्राप्ति स्थान :

१. अद्वैत संस्था प्रधान कार्यालय, क्षेत्रपुर, नारायणगढ (चितवन)।
२. 'तारक' अद्वैत विश्वविद्यालय रिडी (थोर्गा)।
३. 'स्वरूपज्ञापक' विश्वविद्यालय खुदी (लंजुङ्ग) ज्ञानभूमि।
४. 'सन्तापहारक' विश्वविद्यालय क्षेत्रपुर, नारायणगढ़।
५. 'ब्रह्मप्रापक' विश्वविद्यालय उनागुहा बागबजार, काठमाडौं।
६. अद्वैत संस्थाके सब अञ्चल कार्यालयहरू, काठमाडौं, नारायणगढ, रिडी, बन्दीपुर, पोखरा, खुदी, कुन्हा, काशी, भद्रपुर, (झापा), विराटनगर आदि शाखायें।
७. रत्न पुस्तक भण्डार, भोटाहिटी, काठमाडौं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नेपालकी एकमात्र विचार प्रधान आध्यात्मिक प्रतिष्ठान अद्वैत संस्थाके संस्थापक एवं अखिल अद्वैत विश्व विद्यालय नेपालके कुलपति प्राच्य पाश्चात्य स[illegible] विद्या कुशल सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् श्रोत्रिय ब्रह्मनि[illegible] (डा०) क्षितीशचन्द्र चक्रवर्ती, एम० ए०, डी० फिल० वि० एल० द्वारा रचित नेपाली ग्रन्थ रत्न—

- अद्वैत विद्यालयके लिए स्वीकृत :

१. भक्ति शिक्षा
२. सुभाषित रत्न
३. संयुक्त अक्षर परिचय
४. नैतिक शिक्षा
५. गीता परिचय
६. शंकर जीवनी
७. सिम्पल इङ्गलिश रीडर
८. ज्ञानदीप

- अद्वैत महाविद्यालय के लिए स्वीकृत :

९. अमृत वचन
१०. गीतामृत
११. स्वरूप प्रकाश
१२. ईश्वर विज्ञान
१३. ज्ञान सर्वस्व
१४. सुखको बाटो
१५. हस्तामलक
१६. आत्मनिष्ठा
१७. अद्वैत सुधा
१८. आत्मप्रदर्शन
१९. वाशिष्ठामृत
२०. वेदान्त विज्ञान
२१. ज्ञानालोक
२२. आत्मप्रकाश
२३. महौषधि
२४. ज्ञान साधन
२५. वेदान्त रहस्य प्रश्नोत्तरी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu